इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPCC - 107

सामाजिक मनोविज्ञान

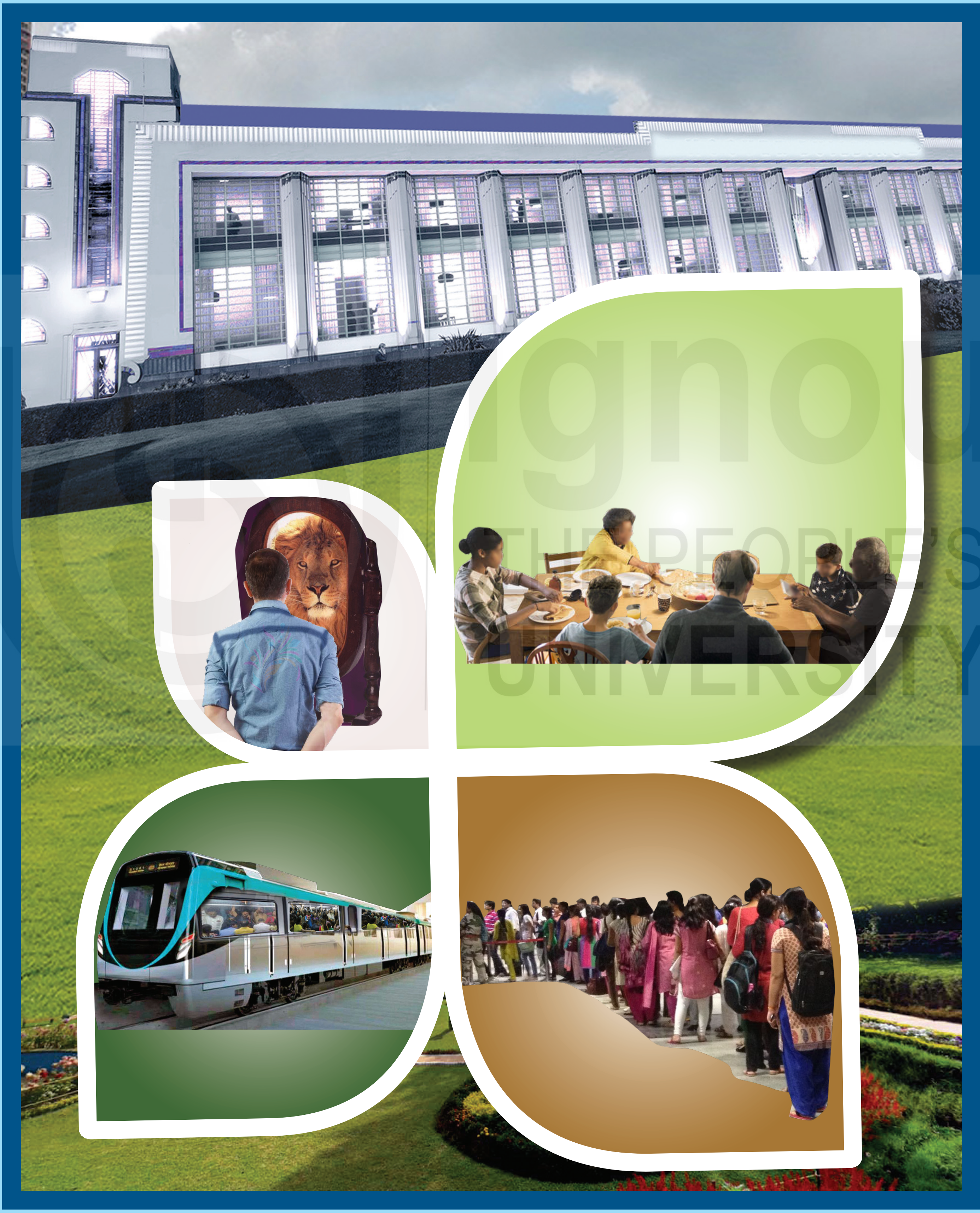

BPCC-107

सामाजिक मनोविज्ञान

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. स्वराज बसु, निदेशक, सा.वि.विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली	प्रो. विमला वीराराघवन, पूर्व एमेरिटस प्रो. मनोविज्ञान, इग्नू, नई दिल्ली	प्रो. पूर्णिमा सिंह मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल आईआईटी, नई दिल्ली
प्रो. अनुराधा सोवानी, एसएनडीटी विश्वविद्यालय, मुबंई	प्रो. सुहास शेटगोवेकर, मनोविज्ञान प्रो. एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली	प्रो. स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान प्रो. एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली
डॉ. मोनिका मिश्रा सहायक मनोविज्ञान प्रोफेसर एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली	डॉ. स्मिता गुप्ता मनोविज्ञान सहायक प्रो. एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली	

पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संपादक डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ. मोहसिन उद्दीन सह आचार्य, मनोविज्ञान सा.वि.विद्यापीठ, इग्नू	

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई	लेखक एवं हिंदी अनुवादक
खण्ड 1	**सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय**
इकाई 1	सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय (डॉ. अरी सूदन तिवारी, वैज्ञानिक 'ई' रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ रोड, तिमारपुर, दिल्ली–110054 (इंडिया) हिंदी अनुवादक : डॉ. सुनील कुमार, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद। पुनरीक्षण : डॉ सुरुचि भाटिया, श्यामा प्रसाद मुकर्जी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 2	सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांत (डॉ. अरी सूदन तिवारी, वैज्ञानिक 'ई' रक्षा संस्थान मनोवैज्ञानिक षोध प्रबंध रक्षा की, लखनऊ रोड, तिमारपुर, दिल्ली–110054 (इंडिया) (केवल कुछ भाग बीपीसी–06, इकाई–3 से ग्रहीत किया गया है) हिंदी अनुवादक : डा. सुनील कुमार, हिंदु कॉलेज, मुरादाबाद। पुनर्वीक्षण : डॉ सुरूची भाटिया, श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली
खण्ड 2	**सामाजिक प्रसंग में आत्म स्वत्व**
इकाई 3	आत्म स्वत्व एवं संबंधित प्रक्रिया ((बीपीसी–06 खण्ड 1, इकाई–4 से ग्रहीत किया गया है) हिंदी अनुवादक : डॉ. कुदसीया नासीर, सहायक परामर्शदाता, कला संकाय, इग्नू पुरर्वीक्षण : डॉ. मोहसिन, सहायक परामर्शदाता, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू
इकाई 4	सामाजिक प्रसंग में आत्म स्वत्व (डॉ. अरी सूदन तिवारी;हिंदी अनुवादक : डा. सुनील कुमार, हिंदु कॉलेज, मुरादाबाद; पुनर्वीक्षण : डॉ सुरूची भाटिया, श्यामा प्रसाद कॉलेज दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली
खण्ड 3	**सामाजिक संज्ञान**
इकाई 5	सामाजिक संज्ञान– सामाजिक व्यवहार को समझना-I डॉ. अरी सूदन तिवारी
इकाई 6	सामाजिक संज्ञान– सामाजिक व्यवहार को समझना-II डॉ. अरी सूदन तिवारी
इकाई 7	मनोदृष्टि और मनोदृष्टि परिवर्तन; डॉ. अरी सूदन तिवारी;हिंदी अनुवादक : डॉ. विरेंद्र प्रताप यादव, श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली पुनर्वीक्षण : डॉ सुरूची भाटिया, श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

खण्ड 4	**सामाजिक प्रभाव**
इकाई 8	सामाजिक प्रभाव; डॉ. अरी सूदन तिवारी
इकाई 9	आक्रामकता और सामाजिक प्रभाव; डॉ. अरी सूदन तिवारी
इकाई 10	अंतवैयक्तिक आकर्षण एवं प्रति सामाजिक व्यवहार ;डॉ. अरी सूदन तिवारी;हिंदी अनुवादक : डॉ. विरेंद्र प्रताप यादव, श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली; पुनर्वीक्षण : डॉ सुरूची भाटिया, श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली
खण्ड 5	**समूह गतिकी (ग्रुप डायनामिक्स)**
इकाई 11	समूह प्रक्रिया;डॉ. अरी सूदन तिवारी
इकाई 12	नेता और नेतृत्व;डॉ. मोहसिन उद्दीन, शैक्षणिक सलाहकार, मनोविज्ञान संकाय, इग्नू; हिंदी अनुवाद : डॉ. कूदसीया, उर्दू संकाय, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू;पुनर्वीक्षण : डॉ. स्मिता गुप्ता, सह आचार्य, मनोविज्ञान विभाग विद्यापीठ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

मुद्रण प्रस्तुति		**सचिवालीय सहयोग**
श्री राजीव गिरधर, सहायक कुलसचिव (प्रकाशन) इग्नू, नई दिल्ली	श्री हेमन्त परीदा सहायक कुलसचिव (प्रकाशन) इग्नू, नई दिल्ली	श्री सुरेश कुमार सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ इग्नू, नई दिल्ली

दिसम्बर, 2020

© इंन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में, मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अन्य पाठ्यक्रमों विषयक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से सम्पर्क करें अथवा हमारी वेबसाइट http://www.ignou.ac.in पर जाएं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निर्देशक, समाज विज्ञान विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित
लेज़र टाइप सेट :टेसा मीडिया एण्ड कंम्यूटर्स
मुद्रण :

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय–वस्तु

खण्ड 1	**सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय**	**7**
इकाई 1	सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय	9
इकाई 2	सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांत	22
खण्ड 2	**सामाजिक प्रसंग में स्वत्व**	**41**
इकाई 3	स्वत्व एवं संबंधित प्रक्रिया	43
इकाई 4	सामाजिक प्रसंग में स्वत्व	57
खण्ड 3	**सामाजिक संज्ञान**	**93**
इकाई 5	सामाजिक संज्ञानः सामाजिक व्यवहार को समझना-I	95
इकाई 6	सामाजिक संज्ञानः सामाजिक व्यवहार को समझना-II	110
इकाई 7	मनोदृष्टि और मनोदृष्टि परिवर्तन	127
खण्ड 4	**सामाजिक प्रभाव**	**163**
इकाई 8	सामाजिक प्रभाव	165
इकाई 9	आक्रामकता एवं सामाजिक प्रभाव	183
इकाई 10	अंतवैयक्तिक आकर्षण एवं प्रति सामाजिक व्यवहार	204
खण्ड 5	**समूह गतिकी (ग्रुप डायनामिक्स)**	**227**
इकाई 11	समूह प्रक्रिया	229
इकाई 12	नेता और नेतृत्व	254

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बीपीसीसी 107 सामाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान में स्नातक (BA hons in Psychology) का महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है।

इस पाठ्यक्रम का पहला खण्ड, सामाजिक मनोविज्ञान का अर्थ, उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा अन्य विषयों से संबंध की परिचर्चा करता है।

इस पाठ्यक्रम का दूसरा खण्ड स्वत्व तथा उससे संबंधित प्रक्रियाओं को दर्शाता है। यह खण्ड यह भी बतलाता है कि समाज किस प्रकार से लोगों के स्वत्व को प्रभावित करता है।

इस पाठ्यक्रम का तीसरा खण्ड सामाजिक अनुभूतियों की परिचर्चा करता है। इस खण्ड में मनोदृष्टि तथा उसके प्रभावों की भी व्याख्या की गई है।

इस पाठ्यक्रम का चौथा खण्ड आक्रमकता तथा आक्रमक व्यवहार पर सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण करता है।

इस पाठ्यक्रम का आखिरी खण्ड सामूहिक प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालता है। यह खण्ड नेता के गुणों और नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा करता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 1
सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 1 सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय

इस खण्ड में दो इकाई शामिल है, पहली इकाई सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा, प्रकृति और दायरे से संबंधित है। यह इकाई भारत के संदर्भ में सामाजिक मनोविज्ञान की उत्पत्ति का भी वर्णन करती है।

अन्य विषयों के साथ सामाजिक मनोविज्ञान के संबंध पर प्रकाष डालती है। यह इकाई सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर भी चर्चा करती है। यह इकाई सामाजिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भी वर्णन करती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय*

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 परिभाषा, प्रकृति और सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

1.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा

1.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति

1.2.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन वैज्ञानिक विधियों से होता है

1.2.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार का अध्ययन करता है

1.2.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है

1.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

1.3 सामाजिक मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास

1.3.1 सामाजिक मनोविज्ञान के प्रारंभिक वर्ष

1.3.2 सामाजिक मनोविज्ञान के औपचारिक वर्ष

1.3.3 सामाजिक मनोविज्ञान का विस्तार

1.3.4 21वीं सदी में सामाजिक मनोविज्ञान

1.3.5 भारत में सामाजिक मनोविज्ञान

1.4 सारांश

1.5 इकाई अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

1.6 शब्दावली

1.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

1.8 सुझाए गए पठन और संदर्भ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करें और इसकी प्रकृति और कार्यक्षेत्र की व्याख्या कर सकेंगे;
- अन्य विषयों के साथ सामाजिक मनोविज्ञान का संबंध स्पष्ट कर सकेंगे;
- सामाजिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक व्यवहार के स्तरों का वर्णन कर सकेंगे; और
- सामाजिक मनोविज्ञान के विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत कर सकेंगे।

* डॉ. अरी सूदन तिवारी, वैज्ञानिक 'ई' रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ रोड़, तिमारपुर, दिल्ली

1.1 परिचय

आइए कुछ स्थितियों, घटनाओं, मुद्दों और लोगों पर विचार करें। नौकरी के साक्षात्कार के लिए जाते समय हम व्यक्तिगत रूप से तैयार होते हैं; लेकिन जब हम साक्षात्कार स्थल पर पहुंचते हैं तो पाते हैं कि सभी उम्मीदवार लगभग एक जैसे ही कपड़े पहने हुए हैं। वैसे ही एक और संदर्भ लें, 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली में निर्भया की घटना के बाद, हजारों लोगों ने दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया। महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला, दलाई लामा और उनके जैसे कई नेताओं ने जनता के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया और लोगों के विचार को सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और नैतिक क्रांतियों की ओर बढ़ाया। उल्लेखनीय नेतृत्व किया।

ये मानव के इतिहास से कुछ उदाहरण हैं जहां या तो हम अन्य लोगों से प्रभावित होते हैं या हम अन्य लोगों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान वह शाखा है, जो सामाजिक परिस्थितियों की एक सारणी में मानव व्यवहार का अध्ययन करती है। इस इकाई में, आपको सामाजिक मनोविज्ञान के बारे में, मनोविज्ञान की शाखा, इसकी प्रकृति, गुंजाइश और अन्य विषयों के साथ संबंध के बारे में समझाया जाएगा। आप ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से भी परिचित होंगे। ये इकाई सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तरों पर भी चर्चा करेगी।

1.2 परिभाषा, प्रकृति और सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो मानव सहभागिता, इसकी अभिव्यक्तियों, कारणों, परिणामों और इसमें शामिल विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है।

1.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा

सामाजिक मनोविज्ञान यह बताता है कि ''हम आस'' पास के लोगों के बारे में क्या महसूस करते हैं तथा सामाजिक प्रसंग के संदर्भ में दूसरे व्यक्ति किस तरह हमारे भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को प्रभावित करते हैं''। (कस्सीन, फीन, और मार्कस, 2017)। थोड़ी अलग अभिव्यक्ति में सामाजिक मनोविज्ञान को एक अनुशासन के रूप में परिभाषित किया गया है, जो समझने और समझाने की कोशिश में वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करता है कि कैसे व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार दूसरों की वास्तविक, कल्पना या निहित उपस्थिति से प्रभावित होते हैं (गॉर्डन एल्पपोर्ट, 1985 पी. 3)।

1.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति

ऊपर दी गई परिभाषाओं की ध्यानपूर्वक व्याख्या से पता चलता है कि इसमें तीन प्रमुख घटक हैं जो सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति की विशेषता बतलाते हैं। इन विशेषताओं को और विस्तृत रूप से नीचे दिया गया है:

1.2.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन वैज्ञानिक विधियों से होता है

सामाजिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक प्रकृति का शास्त्र है। यह सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए व्यवस्थित अवलोकन, विवरण और माप की वैज्ञानिक पद्धति को लागू करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से एकत्र किए जा रहे डेटा को संदर्भित करते हैं। इस तरह के प्रयोगों और अवलोकन को सावधानीपूर्वक किया जाता है और विस्तार से बताया जाता है ताकि अन्य जांचकर्ता काम को दोहरा सकें और सत्यापित कर सकें।

वैज्ञानिक सामाजिक मनोविज्ञान तीन प्रमुख गतिविधियों को करता हैः सामाजिक व्यवहारों का वर्णन, व्याख्या और भविष्यवाणी। सामाजिक मनोविज्ञान सामान्य, मान्यताओं के बजाय, प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर सामाजिक व्यवहार का एक वैज्ञानिक खाता प्रदान करता है। सामाजिक मनोविज्ञान यह समझाने का भी प्रयास करता है कि लोग किसी विशेष सामाजिक स्थिति में एक विशेष तरीके से व्यवहार क्यों करते हैं। सामाजिक व्यवहारों की ऐसी परस्पर व्याख्या से सिद्धांतों का निर्माण होता है जो सामाजिक व्यवहारों की भविष्यवाणी करने और उन्हें एक वांछित दिशा में प्रबंधित करने में मदद करते हैं।

1.2.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार का अध्ययन करता है

सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों का अध्ययन करता है जिसमें – व्यक्तियों का विचार, भावना और व्यवहार भी शामिल है। अनुभूति को उस तरीके से संदर्भित किया जाता है जिस तरह से लोग जानकारी संसाधित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान अनुभूति का अध्ययन करता है जो सामाजिक गतिविधियों से संबंधित है और जो हमारे सामाजिक व्यवहारों को समझने और भविष्यवाणी करने में हमारी मदद करता है। सामाजिक मनोविज्ञान उन भावनाओं का भी अध्ययन करता है जिन्हें हम अपने सामाजिक जीवन में एक व्यक्ति के रूप में अनुभव करते हैं। सामाजिक संदर्भ में हम जो सोचते हैं या महसूस करते हैं वह आखिरकार सामाजिक व्यवहारों में हमारे व्यवहार के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान में सहयोग, संघर्ष, आक्रामकता, आदि की सहायता के रूप में इन व्यवहारों का अध्ययन होता है।

1.2.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है

सामाजिक मनोविज्ञान, सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान के इस घटक से तात्पर्य है कि हमारा व्यवहार अन्य लोगों की उपस्थिति से प्रभावित होता है और हम अन्य लोगों के व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा में निर्दिष्ट सामाजिक संदर्भ को वास्तविक या वर्तमान होने की आवश्यकता नहीं है। यहां तक कि दूसरों की निहित या कल्पना की गई उपस्थिति व्यक्तियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है (*गॉर्डन एल्पपोर्ट*, 1985)। हालांकि, मानव सामाजिक व्यवहार के सामान्य सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक कभी-कभी गैर-सामाजिक कारकों की भी जांच करते हैं। कर्टलेविन (1936), जिनका योगदान इस क्षेत्र में बड़ा महत्वपूर्ण रहा है, उन्होंने सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए एक मॉडल का

प्रस्ताव रखा, जो कहता है कि सामाजिक व्यवहार स्थिति की पारस्परिक क्रिया और व्यक्ति की विशेषताओं (विस्तार के लिए बॉक्स देखें) का परिणाम होता है।

सामाजिक विज्ञान में कुरूत नेतृत्व का समावेश अनौपचारिक सामाजिक व्यवहार के लिए एक मॉडल

कर्ट लेविन (9 सितंबर, 1890-12 फरवरी, 1947) एक जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे और अक्सर ''सामाजिक मनोविज्ञान के संस्थापक'' के रूप में पहचाने जाते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक उन बलों में रुचि रखते हैं जो व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं और उन्हें सामाजिक व्यवहार के विशिष्ट उदाहरणों में संलग्न होने का कारण बनते हैं। आमतौर पर सामाजिक व्यवहार जटिल होता है जिसके कई जटिल कारक होते हैं। नतीजतन, सामाजिक व्यवहार को समझाना एक मुश्किल काम है। इस कार्य को सरल बनाने के लिए, हम सामाजिक व्यवहार के कई कारणों को दो व्यापक श्रेणियों में से एक में निर्दिष्ट कर सकते है। स्थिति और व्यक्ति। कर्टलेविन (1936) द्वारा पहले प्रस्तावित एक सूत्र के अनुसार, सामाजिक व्यवहार, स्थिति और व्यक्ति की विशेषताओं, या की पारस्परिक क्रिया का एक कार्य है या व्यवहार = f (सामाजिक स्थिति x व्यक्तिगत विशेषताएँ)

बॉक्स 1.1: कर्ट लेविन का सामाजिक व्यवहार का मॉडल

1.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भ में व्यक्तिगत व्यवहार पर केंद्रित है, इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान का विषय व्यक्ति के समाज और अन्य लोगों के साथ पारस्परिक अंतरक्रियाओं का अध्ययन करता है। सामाजिक दुनिया मानव के संबंधों पर आधारित है और सामाजिक मनोविज्ञान के विषय को प्रस्तुत करती है। सामाजिक मनोविज्ञान के दायरे को मोटे तौर पर निम्नलिखित तरीकों से रेखांकित किया जा सकता है:

- लोग आमतौर पर अनुमोदन और अस्वीकृति, किसी के पक्ष और विपक्ष की भावनाओं के रूप में व्यक्त करते हैं, या विभिन्न व्यक्तियों, वस्तुओं, मुद्दों के प्रति पसंद और नापसंद दर्शाते हैं जो उनके विचार और कार्यों को प्रभावित करते हैं। इस घटना को दृष्टिकोण या रवैया कहा जाता है और सामाजिक मनोवैज्ञानिक रवैये के विभिन्न पहलुओं पर जोर देते रहे हैं– जैसे रवैया का निर्माण, दृष्टिकोण संरचना, दृष्टिकोण परिवर्तन, व्यवहार का कार्य तथा दृष्टिकोण और व्यवहार के बीच संबंध।

- सामाजिक मनोविज्ञान के उभरते क्षेत्रों में से एक सामाजिक अनुभूति है, जो सामाजिक उत्तेजनाओं से संबंधित लोगों को अनुभव, विचार और याद रखने के तरीकों का अध्ययन करता है। सामाजिक अनुभूति के तहत विभिन्न घटनाएं व्यक्ति की धारणा, आरोपण प्रक्रिया, स्कीमा, रूढ़िवादिता आदि का अध्ययन होता है।

- सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन का एक पारंपरिक, मुख्य क्षेत्र सामाजिक प्रभाव है जो लोगों के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करने के तरीके को संदर्भित करता है।

- सामाजिक मनोवैज्ञानिक की रुचि इस व्याख्यान को जानने में भी है कि लोग कभी-कभी एक समर्थक सामाजिक तरीके से काम करते हैं (दूसरों की मदद करना, पसंद करना या प्यार करना), लेकिन अन्य समय में असामाजिक तरीके से काम करते हैं (शत्रुता, आक्रामकता या दूसरों के खिलाफ पूर्वाग्रह)।

- सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक समूहों और समूह की गतिशीलता से संबंधित विभिन्न घटनाओं का व्यापक अध्ययन किया है। समूह को समूह रचना, संरचना तथा समूह प्रक्रिया के संदर्भ में समझा जा सकता है। समूह संरचना, समूह प्रक्रिया पर इसके प्रभाव व्यक्तिगत परिवर्तन और समूह विकास के साथ-साथ कार्य प्रदर्शन के संदर्भ में भी समझा जा सकता है। इस प्रकार, एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक लगभग हर चीज का अध्ययन करता है जो हम हर दिन सामाजिक संदर्भ में करते हैं (विस्तार के लिए नीचे बॉक्स देखें)।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक क्या अध्ययन करते हैं?

- सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस बात का अध्ययन करते हैं कि क्यों हम अक्सर दूसरे लोगों के लिए सहायक होते हैं और क्यों हम अन्य समय में अमित्र या आक्रामक हो सकते हैं।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक अन्य लोगों के साथ अच्छे संबंध रखने और एकाकी होने की लागतों के लाभों का अध्ययन करते हैं।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस बात का अध्ययन करते हैं कि कौन से कारक व्यक्ति को किसी उत्पाद की तुलना में दूसरे उत्पाद को खरीदने के लिए प्रेरित करते हैं।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह भी अध्ययन करते हैं कि सामाजिक परिदृश्य में पुरुष और महिलाएं अलग-अलग व्यवहार कैसे करते हैं।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं कि, ऐसे कौन से कारक हैं जो कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार में संलग्न होने के लिए प्रेरित करते हैं।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस बात का अध्ययन करते हैं कि कोई व्यक्ति अपने जीवन को जोखिम में डालकर पूर्ण अजनबी को बचाने की कोशिश करता है।

बॉक्स 1.2 : सामाजिक मनोवैज्ञानिकों का योगदान

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

1) सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करें।

....

....

....

....

....

....

2) आप यह कैसे कह सकते हैं कि सामाजिक मनोविज्ञान एक विज्ञान है?

....

....

....

....

....

3) सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति का वर्णन करें ।

....

....

....

....

....

4) सामाजिक मनोविज्ञान के दायरे का लेखा-जोखा दें।

....

....

....

....

....

1.3 सामाजिक मनोविज्ञान का ऐतिहासयिक विकास

यद्यपि समाज में मानव व्यवहार का दार्शनिक विश्लेषण हमेशा सामाजिक चिंतकों के लिए रुचि का प्रमुख मुद्दा रहा है, लेकिन सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित अनुभवजन्य दृष्टिकोण उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिखता है। विकास के चरणों में सामाजिक मनोविज्ञान के इतिहास को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है:

1.3.1 सामाजिक मनोविज्ञान के प्रारंभिक वर्ष

सामाजिक मनोविज्ञान की शुरुआती जड़ों को जर्मन विद्वानों का एक समूह माना जाता है, जो हेगेल नामक दार्शनिक से प्रभावित थे। 1860 में, स्टिंथल और लाजर ने इस वोल्केरसाइकोलॉजी के लिए समर्पित एक पत्रिका की स्थापना की जिसमें सामूहिक मन के अध्ययन पर सैद्धांतिक और तथ्यात्मक लेख प्रकाशित किए। सामूहिक मन की इस अवधारणा को परस्पर विरोधी तरीकों से व्याख्यायित किया गया था: एक तरफ व्यक्ति के भीतर सोचने का एक सामाजिक तरीका और दूसरी तरफ ट्रांस-इंडिविजुअल मानसिकता का एक रूप जिसमें लोगों के पूरे समूह शामिल हो सकते हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान पर दो शुरुआती पाठ्यपुस्तकें मनोवैज्ञानिक द्वारा लिखी गईं– विलियम मैकडॉगल (1908) ब्रिटेन में और समाजशास्त्री– रॉस (1908) अमेरिका द्वारा लिखी गई। हालांकि, इनमें से कोई भी पाठ्यपुस्तक एक आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक की तरह नहीं थी और उनके मुख्य विषय प्रमुख प्रवृत्ति,

प्राथमिक भावनाएं, भावनाओं की प्रकृति, नैतिक आचरण, महत्वाकांक्षा, धार्मिक अवधारणाएं और चरित्र की संरचना थे।

19वीं शताब्दी के अंत में और 20वीं शताब्दी के सामाजिक मनोविज्ञान की शुरुआत ने मानव के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को व्यवस्थित रूप से मापना शुरू किया। यूरोप और संयुक्त राज्य में कई प्रयोगशालाएं स्थापित की गईं, जिसकी शुरुआत 1879 में लीपजिग में एक मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला के साथ हुईं, जो जर्मनी में मनोविज्ञान के लिए एक प्रयोगात्मक आधार प्रदान करने के लिए विलेम वुंड द्वारा स्थापित की गई थीं। इस बीच, व्यवहारवादी जॉन वाटसन ने 1913 में मनोविज्ञान के लिए अपने क्लासिक वैज्ञानिक घोषणापत्र को प्रकाशित किया।

1924 में, वाटसन से प्रेरित, फ्लॉयड ऑलपोर्ट ने सामाजिक मनोविज्ञान के लिए एक एजेंडा प्रकाशित किया। वाटसन पर निर्माण करते हुए, ऑलपोर्ट ने तर्क दिया कि सामाजिक मनोविज्ञान तभी फलता-फूलता है, जब यह एक प्रायोगिक विज्ञान बन जाए। कुछ ही समय बाद, गार्डनर मर्फी और लोइस मर्फी (1931/1937) ने वास्तव में प्रायोगिक सामाजिक मनोविज्ञान नामक पुस्तक का निर्माण कर न्यायोचित महसूस किया। सामाजिक मनोविज्ञान में पहले प्रयोग को अक्सर नॉर्मन ट्रिपल (1898) के अध्ययन के रूप में पहचाना जाता है जिसमें यह अध्ययन किया गया कि कैसे लोग किसी कार्य में अधिक प्रयास कर सकते हैं जब अन्य लोग पर्यवेक्षक या प्रतियोगी के रूप में मौजूद हों।

1.3.2 सामाजिक मनोविज्ञान के औपचारिक वर्ष

1940 और 1950 के दशक के दौरान, कर्ट लेविन और लियोन फिस्टिंगर ने वैज्ञानिक रूप से कठोर सामाजिक मनोविज्ञान के लिए तर्क दिया। ''सामाजिक मनोविज्ञान के जनक'' के रूप में पहचाने जाने वाले लेविन ने लोगों के साथ गतिशील बातचीत पर ध्यान देने सहित अनुशासन के कई महत्वपूर्ण विचारों को विकसित किया। 1954 में, फिस्टिंगर ने व्यवहार विज्ञान में रिसर्च मेथड्स नामक एक पुस्तक का संपादन किया, जिसमें वैज्ञानिक माप की आवश्यकता पर बल दिया गया और सामाजिक व्यवहार के बारे में अनुसंधान परिकल्पनाओं को व्यवस्थित रूप से परीक्षण करने के लिए प्रयोगशाला में प्रयोगों का उपयोग किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि इन प्रयोगों में तथ्यात्मक परिणामों के लिए प्रतिभागियों को अनुसंधान के उद्देश्य के बारे में नहीं बताया जाता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय में, अनुरूपता पर अध्ययन मुजफ्फर शरीफ (1936) और सोलोमन ऐश (1952) द्वारा आयोजित किया गया था। स्टैडली मिलग्राम (1974) और फिलिप जोमार्डो (हैनी, बैंक्स, और जिम्बार्डो, 1973) द्वारा आज्ञाकारिता के विषयों पर अध्ययन किए गए।

1.3.3 सामाजिक मनोविज्ञान का विस्तार

सामाजिक मनोविज्ञान ने अन्य विषयों पर भी विस्तार किया। जॉन डार्ले और बिब लैटन (1968) ने संदर्भ के परिप्रेक्ष्य को समझाने के लिए एक मॉडल विकसित किया जिसमें यह बताया गया कि कब लोग दूसरों की जरूरत में मदद करते हैं और कब नहीं करते हैं। लियोनार्ड बर्कोविट्ज (1962) ने मानव आक्रामकता का अध्ययन शुरू किया। कई अन्य सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने समूह में निर्णय लेने की प्रक्रिया पर

ध्यान केंद्रित किया (*जेनिस*, 1972)। गॉर्डन ऑलपोर्ट और मुजफिर शेरिफ सहित अन्य सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने समझ के लक्ष्य के साथ अंतर-समूह संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया और संभवतः रूढ़ियों, पूर्वाग्रह और भेदभाव की घटना को कम किया।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक मनोविज्ञान ने व्यवहार में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के दृष्टिकोण और महत्व के क्षेत्र में विस्तार किया। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने अनुनय की प्रक्रिया का अध्ययन करना शुरू कर दिया था, जिसके द्वारा विज्ञापनदाता और अन्य लोग उन्हें सबसे प्रभावी और प्रेरक बनाने के लिए अपने संदेश प्रस्तुत कर सकते थे (*ईगली* एंड *चौकेन*, 1993; *होवलैंड, जेनिस* और *केली*, 1963)। उन्होंने उन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया जिनका उपयोग लोग संदेशों का मूल्यांकन करते समय करते हैं। व्यवहार और व्यवहार के बीच संबंध भी एक महत्वपूर्ण पहलू था जिसका इस अवधि के दौरान बड़े पैमाने पर अध्ययन किया गया था। लियोन फेस्टिंगर का महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक असंगति सिद्धांत इस समय के दौरान विकसित किया गया था और बाद के शोधों (फेस्टिंगर, 1957) के लिए एक मॉडल बन गया।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर सामाजिक मनोविज्ञान का ध्यान केंद्रित किया गया था और आगे (*फिस्के* और *टेलर*, 2008) की पुष्टि की गई थी। सामाजिक अनुभूति दृष्टिकोण इस बात पर केंद्रित है कि हमारी सामाजिक दुनिया के बारे में हमारा ज्ञान कैसे विकसित होता है और यह हमारी सामाजिक सोच और व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है। इसके अलावा, किस हद तक मनुष्यों के निर्णय लेने की प्रक्रिया को संज्ञानात्मक और प्रेरक दोनों प्रक्रियाओं के कारण त्रुटिपूर्ण किया जा सकता था, यह भी प्रलेखित किया गया (*काहमन, स्लोविक* और *टावर्सकी*, 1982)।

1.3.4 21वीं सदी में सामाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान अभी भी सामाजिक व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार कर रहा है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने हमारे स्वास्थ्य और खुशी पर सामाजिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन किया है, हमारे व्यवहार पर विकासवादी अनुभवों और संस्कृतियों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं अध्ययन की हैं। सामाजिक तंत्रिका विज्ञान का क्षेत्र भी उभरा है, जो अध्ययन करता है कि हमारे सामाजिक व्यवहार, हमारे मस्तिष्क की गतिविधियों से कैसे प्रभावित होते हैं तथा उसे प्रभावित करते हैं। (*लिबरमैन*, 2010)। सामाजिक मनोवैज्ञानिक सामाजिक व्यवहार को मापने और समझने के लिए लगातार नए तरीके खोज रहे हैं और क्षेत्र का विकास जारी है।

1.3.5 भारत में सामाजिक मनोविज्ञान

1928 में, भारत में सामाजिक मनोविज्ञान पर पहली पुस्तक, जिसका शीर्षक– ''*सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय*' तथा जिसे एन एन सेनगुप्ता ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के पहले विभाग के पहले अध्यक्ष, एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री राधाकमल मुखर्जी के साथ मिलकर लिखा था। हालांकि, सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच यह प्रारंभिक संबंध जारी नहीं रह सका और भारतीय सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने पश्चिमी अनुसंधान अभिविन्यासों के प्रभाव में, मनोविज्ञान की पहचान को वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने के लिए सभी प्रयास किए। जमुना प्रसाद, बार्टलेट ने (1932) घटनाओं की पुनर्संरचनात्मक स्मृति से

प्रेरित होकर, 1934 में बिहार में प्रसिद्ध भूकंप का अध्ययन किया और 35 हजार से अधिक अफवाहों का संग्रह और विश्लेषण किया और इस काम को ब्रिटिश जर्नल ऑफ साइकोलॉजी में 1935 में प्रकाशित किया। यह और अन्य ऐसे ही कामों की तर्ज पर दुर्गानंद सिन्हा (1952) को फिस्टिंगर ने संज्ञानात्मक असंगति के अपने सिद्धांत को तैयार करने के आधार के रूप में रिपोर्ट की थी।

बाद के वर्षों में, भारतीय सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने पूर्वाग्रह, रूढ़ियों और सामाजिक दृष्टिकोण के क्षेत्रों में काम करना जारी रखा। बड़े पैमाने पर विभिन्न रवैये के उपाय पर सर्वेक्षण किए गए। आदिनारायण ने नस्लीय और सांप्रदायिक दृष्टिकोण (1953) और जाति दृष्टिकोण (1958) पर अध्ययन किया। स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, कृषि नवोन्मेष के लिए जन जागरूकता कार्यक्रमों पर जोर देने के साथ, दृष्टिकोण परिवर्तन अनुसंधान का एक प्रमुख विषय बन गया। इन वर्षों के दौरान सामाजिक मनोविज्ञान भारत में लोकप्रियता में बढ़ रहा था जो कि समय-समय पर किए गए सर्वेक्षणों से स्पष्ट था।

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों अंतर्ग्रहीय संबंधों (*सिंह,* 1981), सापेक्ष या तुलनात्मक क्षय अभाव (*मिश्रा,* 1982), अंतर्ग्रहण (*पांडे,* 1986) और नेतृत्व (*जे.बी.पी. सिन्हा,* 1980) के क्षेत्रों की खोज की जिसमें व्यक्तिगत व्यवहार पर सामाजिक समूहों के प्रभाव की जाँच की गई। हाल ही में, रुचि जातीय पहचान, उदास वर्गों के उदय और संबंधित विषयों का अध्ययन करने के लिए स्थानांतरित हो रही है। इस शोध में, मैक्रो-लेवल वेरिएबल्स (जनसांख्यिकीय, सामाजिक या सांस्कृतिक) और माइक्रो-लेवल वेरिएबल्स (दृष्टिकोण, अभाव की भावना, आदि) के बीच कारण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। दृष्टिकोण और पद्धति अमेरिकी विविधता के व्यक्तिगत सामाजिक मनोविज्ञान के अनुरूप थी। एक और क्षेत्र जो लंबे समय तक लोकप्रियता में बना रहा, वह था उपलब्धि प्रेरणा। स्कूल और कॉलेज के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा को मापने के लिए बड़ी संख्या में तराजू का निर्माण किया गया था। हाल के वर्षों में आशीश नंदी का स्वयं पर काम, विज्ञान, राष्ट्रीयता और सुधीर काकर की पहचान और रिश्तों पर काम एक तरह से स्वदेशी है और यह अमेरिका और यूरोप के सामाजिक मनोविज्ञान से किसी भी तरह प्रभावित नहीं है (देखें, *दलाल* और *मिश्रा,* 2001)।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न II

निम्नलिखित कथनों में सत्य और असत्य बताइए।

1) सामाजिक मनोविज्ञान पर आधारित पाठ्यपुस्तक को मनोवैज्ञानिक विलियम मैकडॉगल ने ब्रिटेन में लिखी थी।

2) व्यवहारवादी जॉन वाटसन ने वर्ष 1913 में क्लासिक वैज्ञानिक घोषणा पत्र को प्रकाशित किया।

3) लेविन को समाज मनोविज्ञान का पिता कहा जाता है।

4) नरेन्द्र नाथ सेन गुप्ता मुबई विश्वविद्यालय के पहले मनोविज्ञान विभाग के प्रथम अध्यक्ष बने।

1.4 सारांश

उपर्युक्त चर्चाओं से यह निष्कर्ष निकाला जाया सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान एक ऐसा क्षेत्र है जो हमारे विचारों, भावनाओं तथा दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार का विश्लेषण करता है। दूसरे कैसे हमारे व्यवहारों को प्रभावित करते हैं, इसे भी सामाजिक प्रसंग के संदर्भ में यह दर्शाता है। संभवतः सामाजिक मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है जो समाज के दायरे में हमारे तथा दूसरों के बीच की तालमेल को दर्शाता है। सामाजिक मनोविज्ञान की नींव 20वीं सदी में रखी जा चुकी थी, परंतु इसका विस्तार 20वीं सदी के अंत में हुआ था। भारत में इस क्षेत्र में किये गये अध्ययनों में स्वतव (Self), संस्कृति (Culture), राष्ट्रीयता (Nationalty) एवं पहचान (Identity) जैसे क्षेत्र मुख्यतः थे।

सामाजिक मनोविज्ञान के दृष्टिकोण सामाजिक विज्ञान से अलग है, सामाजिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न स्तरों पर मानव के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करता हैं जैसे कि एक दूसरे के बीच समूहों के बीच तथा समूहों में तालमेलों (interaction) का अध्ययन।

1.5 इकाई के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

1) सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करें और सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्यक्षेत्र की व्याख्या करें।

2) सामाजिक मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत करें।

1.6 शब्दावली

सामाजिक मनोविज्ञान : सामाजिक मनोविज्ञान को वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। हम अपने आस पास के लोगों के बारे में कैसा महसूस करते हैं, उनके बारे में कैसा सोचते हैं और व्यवहार करते हैं और कैसे हमारी भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को सामाजिक संदर्भ प्रभावित करते हैं।

सामाजिक तंत्रिका विज्ञान : सामाजिक तंत्रिका विज्ञान इस बात का अध्ययन है कि हम और हमारे सामाजिक व्यवहार एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं और हमारे मस्तिष्क की गतिविधियों से प्रभावित होते हैं।

1.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न I

1) सामाजिक मनोविज्ञान को ''हमारे बारे में कैसा महसूस होता है, इस बारे में सोचने और हमारे आसपास के लोगों के प्रति व्यवहार करने और हमारी भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को सामाजिक संदर्भ में उन लोगों द्वारा कैसे प्रभावित किया जाता है'' के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है *मार्कस,* 2017)।

2) सामाजिक मनोविज्ञान प्रकृति में वैज्ञानिक है। यह सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए व्यवस्थित अवलोकन, विवरण और माप की वैज्ञानिक

पद्धति को लागू करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से एकत्र किए जा रहे डेटा को संदर्भित करते हैं। इस तरह के प्रयोगों और अवलोकन को सावधानीपूर्वक किया जाता है और विस्तार से बताया जाता है ताकि अन्य जांचकर्ता काम को दोहरा सकें और सत्यापित कर सकें।

3) निम्नलिखित तीन प्रमुख घटक सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को दर्शाते हैं:

- सामाजिक मनोविज्ञान अध्ययन के वैज्ञानिक तरीकों को लागू करता है।
- सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार का अध्ययन करता है।
- सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है।

4) सामाजिक मनोविज्ञान के दायरे को मोटे तौर पर निम्नलिखित तरीकों से रेखांकित किया जा सकता है:

- सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं पर जोर देते हैं।
- सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक अनुभूति से भी संबंधित है।
- सामाजिक प्रभाव सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन का एक पारंपरिक, मुख्य क्षेत्र है।
- सामाजिक मनोवैज्ञानिक भी इस सवाल में रुचि रखते हैं कि लोग कभी-कभी सामाजिक तरीके से कार्य क्यों करते हैं लेकिन अन्य समय में असामाजिक तरीके से कार्य करते हैं।

स्व मूल्यांकन प्रश्न II

1) सत्य
2) सत्य
3) सत्य
4) असत्य

1.8 सुझाए गए पठन और संदर्भ

Kassin, S., Fein, S., & Markus, H. R. (2017). *Social psychology (10th ed.).* Cengage Learning.

Baron, R. A., & Branscombe, N. R. (2016). *Social psychology (14th ed.).* Boston: Pearson/Allyn& Bacon.

References

Adinarayan, S. P. (1953). Before and after Independence - A study of racial and communal attitudes in India. *British Journal of Psychology, 44*, 108-115.

Adinarayan, S.P. (1957). A study of racial attitudes in India. *Journal of Social Psychology, 45*, 211-216.

Allport, F. H. (1924). *Social psychology*. Boston, MA: Houghton Mifflin.

Allport, G. W. (1985). The historical background of social psychology. In G. Lindzey & E. Aronson (Eds.), *Handbook of social psychology* (3rd ed., Vol. I, pp. 1-46). New York: Random House.

Asch, S. E. (1952). *Social psychology*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

B. F. Skinner (1938). *The Behavior of Organisms: An Experimental Analysis.* Cambridge, Massachusetts: B. F. Skinner Foundation.

Bandura, A. (1977). *Social learning theory.* Englewood Cliff s, NJ: Prentice-Hall.

Bartlett, F. C. (1932). *Remembering: A study in experimental and social psychology.* Cambridge: Cambridge University Press.

Berkowitz, L. (1962). *Aggression: A social psychological analysis*. New York, NY: McGraw-Hill.

Dalal, A. K., & Mishra, G. (2001). Social psychology in India: Evolution and emerging trends. In In A. K. Dalal& G. Misra (Eds.), *New Directions in Indian Psychology* (vol. 1: Social Psychology), New Delhi: Sage.

Darley, J. M., & Latané, B. (1968). Bystander intervention in emergencies: Diffusion of responsibility. *Journal of Personality and Social Psychology, 8*, 377-383.

Eagly, A. H., &Chaiken, S. (1993). *The psychology of attitudes*. Fort Worth, TX: Harcourt Brace Jovanovich.

Festinger, L. (1954). A theory of social comparison processes. *Human Relations, 7*, 117-140.

Festinger, L. (1957). *A theory of cognitive dissonance*. Evanston, IL: Row, Peterson.

Fiske, S. T., & Taylor, S. E. (2008). *Social cognition: From brains to culture*. Boston, MA: McGraw-Hill.

Haney, C., Banks, C., & Zimbardo, P. (1973). Interpersonal dynamics in a simulated prison. *International Journal of Criminology and Penology, 1*, 69-97.

Hovland, C. I., Janis, I. L., & Kelley, H. H. (1963). *Communication and persuasion*. Oxford, England: Yale University Press.

Janis, I. L. (1972). *Victims of groupthink: A psychological study of foreign policy decisions and fiascos*. Boston, MA: Houghton-Mifflin.

Kahneman, D., Slovic, P., & Tversky, A. (1982). *Judgment under uncertainty: Heuristics and biases*. Cambridge, England: Cambridge University Press.

Kassin, S., Fein, S., & Markus, H. R. (2017). *Social psychology (10th ed.)*. Cengage Learning.

Kelley, H. H., & Thibaut, J. W. (1978). *Interpersonal relations: A theory of interdependence*. New York: Wiley.

LeBon, G. (1908). *The crowd: A study of the popular mind*. London: Unwin (original work published 1896). Online: http://cupid.ecom.unimelb.edu.au/het/lebon/crowds.pdf

Lewin, K.(1936). *A dynamic theory of personality.* New York: McGraw-Hill.

Lieberman, M. D. (2010). Social cognitive neuroscience. In S. T. Fiske, D. T. Gilbert, & G. Lindzey (Eds.), *Handbook of social psychology* (5th ed., Vol. 1, pp. 143–193). Hoboken, NJ: John Wiley & Sons.

McDougall, W. (1908). *An introduction to social psychology*. London: Methuen.

McDougall, W. (1920). *The group mind*. London: Cambridge University Press.

Milgram, S. (1974). *Obedience to authority*. London: Tavistock.

Misra, G. (1982). Deprivation and development : A review of Indian studies. *Indian Educational Review, 18*, 12-33.

Murphy, G., & Murphy, L. B. (1931). *Experimental social psychology*. New York: Harper (rev. ed published with T. M. Newcomb in 1937).

Pandey, J. (1986). Social-cultural perspectives on ingratiation. In B.A. Mahar & W.B. Mahar (Ed.), *Progress in experimental personality research* (Vol. 14). New York: Academic Press.

Pavlov, I.P. (1927). *Conditioned Reflexes: An Investigation of the Physiological Activity of the Cerebral Cortex* (translated by G.V. Anrep). London: Oxford University Press.

Ross, E. A. (1908). *Social psychology*. New York: Macmillan.

Sherif, M. (1936). *The psychology of social norms*. New York: Harper.

Singh, A. K. (1981). Development of religious identity and prejudice in Indian children. In D. Sinha (Ed.), *Socialization of the Indian Child* (pp.87-100). New Delhi: Concept.

Sinha, D. (1952). Behaviour in a catastrophic situation: A psychological study of reports and rumours. *British Journal of Psychology, 43*, 200-209.

Sinha, J. B. P. (1980). *Nurturant task leader*. New Delhi: Concept.

Triplett, N. (1898). The dynamogenic factors in pacemaking and competition. *American Journal of Psychology, 9*, 507-533.

इकाई 2 सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांत*

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 सामाजिक मनोविज्ञान और अन्य विषय

- 2.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान और अन्य सामाजिक विज्ञान
- 2.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान और मनोविज्ञान में अन्य शाखाएँ

2.3 सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तर

- 2.3.1 व्यक्तिगत-अंतरव्यक्तिक स्तर का विश्लेषण
- 2.3.2 पारस्परिक सहभागिता
- 2.3.3 व्यक्तिगत और समूह के बीच सहभागिता
- 2.3.4 समूहों के बीच बातचीत

2.4 सामाजिक मनोविज्ञान के सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- 2.4.1 सीखने/अधिगम के सिद्धांत
- 2.4.2 संज्ञानात्मक सिद्धांत

2.5 सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान की विधियां

- 2.5.1 अवलोकन विधि
- 2.5.2 प्रायोगिक विधि
  - 2.5.2.1 अर्ध–प्रयोग्यात्मक विधि
  - 2.5.2.2 प्रायोगिक डिजाइन
- 2.5.3 अनुसंधान विधियों में नैतिक मुद्दे

2.6 सारांश

2.7 इकाई के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

2.8 शब्दावली

2.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

2.10 सुझाए गए पठन और संदर्भ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- सामाजिक व्यवहार के स्तरों का विश्लेषण करना;
- सामाजिक मनोविज्ञान का अन्य विषयों के साथ संबंधों को स्पष्ट करना;
- सामाजिक मनोविज्ञान के विभिन्न सैंद्धातिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करना;
- सामाजिक मनोविज्ञान में विभिन्न प्रकार के अनुसंधान विधियों पर चर्चा करना;

* डॉ. अरी सूदन तिवारी, वैज्ञानिक 'ई' रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ रोड़, तिमारपुर, दिल्ली

- अनुसंधानिक विधियों से जुड़े विभिन्न नैतिक मुद्दों को स्पष्ट करना।

2.1 परिचय

पिछली इकाई से आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि मनोविज्ञान की वो शाखा जो सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहारों का अध्ययन करती है उसे सामाजिक मनोविज्ञान कहते हैं, इस इकाई में आपको मनोविज्ञान कि इस शाखा (सामाजिक मनोविज्ञान) की प्रकृति, क्षेत्र तथा अन्यों विषयों के साथ संबंध को बताया जायेगा। आप इस इकाई के द्वारा सामाजिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से भी परिचित होंगे। यह इकाई सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तरों पर भी चर्चा करेगी।

2.2 सामाजिक मनोविज्ञान और अन्य विषय

सामाजिक मनोविज्ञान अन्य सामाजिक विज्ञानों और मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंधित है। यह महत्वपूर्ण तरीकों से उनसे अलग भी है।

सामाजिक मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान के परिवार के अन्य विषयों से भी संबंधित है और कई मायनों में मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं से भी। यह महत्वपूर्ण तरीकों से उनसे अलग है।

2.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान और अन्य सामाजिक विज्ञान

सामाजिक वैज्ञानिक लोगों और उनके समाजों का अध्ययन करते हैं, जिनमें लोग रहते हैं। वे इस बात में रुचि रखते हैं कि लोग एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं। विभिन्न सामाजिक विज्ञान सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

- **सामाजिक मनोविज्ञान और मानवविज्ञान**

  मानवविज्ञान मानव संस्कृति का अध्ययन करता है। मानवविज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान विषय अंतर संबंधित हैं। मानव संस्कृति में लोगों के समूह के साझा मूल्य, विश्वास और अंतर मूल्यों, विश्वासों, और प्रथाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारित किया जाता है। मनुष्य केवल सामाजिक प्राणी नहीं हैं, वे सांस्कृतिक पशु भी हैं। मानव व्यवहार को समझने के लिए, सामाजिक मनोविज्ञान को उस सांस्कृतिक संदर्भ को समझना होगा, जिसमें वह व्यवहार होता है।

- **सामाजिक मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र**

  आप यह जान सकते हैं कि अर्थशास्त्र का क्षेत्र किसी विशेष समाज की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग की प्रवृत्तियों से संबंधित है। यह समान रूप से सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के हित को प्रभावित करता है। वास्तव में, कुछ सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत आर्थिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक विनिमय सिद्धांत लागत, पुरस्कार, निवेश और उपलब्ध विकल्पों की संख्या जैसे कारकों पर विचार करके रिश्तों के प्रति प्रतिबद्धता की भविष्यवाणी करता है। अर्थशास्त्र हमारे ध्यान को बड़ी सामाजिक प्रणालियों (जैसे श्रम बाजार या मुद्रा प्रणाली) और इन प्रणालियों के व्यवहार को आकार देता है। फिर, मानव व्यवहार की पूरी समझ के लिए न केवल उस व्यक्ति के दिमाग के

अंदर क्या चल रहा है और उस समय उसके या उसके तत्काल परिवेश में क्या हो रहा है, के अवलोकन की आवश्यकता है, लेकिन यह भी जानना जरूरी है कि व्यक्ति का व्यवहार बड़ी सामाजिक प्रणाली में कैसे सुसज्जित है।

- **सामाजिक मनोविज्ञान और राजनीति विज्ञान**

  राजनीति विज्ञान राजनीतिक संगठनों और संस्थानों, विशेषकर सरकारों का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक राजनीतिक व्यवहार पर अनुसंधान करते हैं। वे मतदान, पार्टी की पहचान, उदार बनाम रूढ़िवादी विचारों और राजनीतिक विज्ञापन जैसे राजनीतिक मुद्दों का अध्ययन करते हैं। वे इस बात में भी रुचि रखते हैं कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में बेहतर नेता क्यों होते हैं।

- **सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र**

  समाजशास्त्र मानव समाजों और उन समाजों को बनाने वाले समूहों का अध्ययन है। यद्यपि समाजशास्त्री और सामाजिक मनोवैज्ञानिक दोनों इस बात में रुचि रखते हैं कि लोग समाजों और समूहों में कैसे व्यवहार करते हैं, वे जिस चीज पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उसमें भिन्नता होती है। समाजशास्त्री समूह पर एक एकल इकाई के रूप में ध्यान केंद्रित करते हैं, जब कि सामाजिक मनोवैज्ञानिक समूह बनाने वाले व्यक्तिगत सदस्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कुछ समाजशास्त्री खुद को सामाजिक मनोवैज्ञानिक कहते हैं और दो क्षेत्रों के बीच विचारों और निष्कर्षों का आदान-प्रदान करते हैं जो कभी-कभी काफी फलदायी रहे हैं क्योंकि वे एक ही समस्या के लिए विभिन्न दृष्टिकोण लाते हैं।

2.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान और मनोविज्ञान में अन्य शाखाएँ

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन है। मनोविज्ञान एक बड़े पेड़ की तरह है जिसमें कई शाखाएँ होती हैं। सामाजिक मनोविज्ञान उन शाखाओं में से एक है, लेकिन यह कुछ अन्य शाखाओं के साथ निकटता से संबंधित है।

सामाजिक मनोविज्ञान और जैविक मनोविज्ञान

व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और कार्यों के पीछे मस्तिष्क संबंधी गतिविधियाँ या हार्मोन जैसी कुछ शारीरिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। जैविक या शारीरिक मनोविज्ञान और हाल ही में तंत्रिका विज्ञान ने मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और शरीर के अन्य पहलुओं के बारे में जानने पर ध्यान केंद्रित किया है। कुछ समय पहले तक, इस कार्य का सामाजिक मनोविज्ञान के साथ बहुत कम संपर्क था, लेकिन 1990 के दशक के दौरान कई सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक व्यवहार के जैविक पहलुओं को देख और यह रुचि 21वीं सदी में भी जारी रही। सामाजिक तंत्रिका विज्ञान और सामाजिक मनोचिकित्सा अब संपन्न क्षेत्र हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान और नैदानिक मनोविज्ञान

नैदानिक मनोविज्ञान असामान्य व्यवहार पर केंद्रित होता है, जबकि सामाजिक मनोविज्ञान सामान्य व्यवहार पर केंद्रित होता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत तथाकथित सामान्य व्यवहार पर बहुत हद तक प्रकाश डाल सकता है। दोनों शाखाओं, सामाजिक और नैदानिक मनोविज्ञान में विचारों के आदान-प्रदान और एक-दूसरे के क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि को उत्तेजित करने की एक लंबी परंपरा रही है। विशेष रूप से,

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अच्छा उपयोग किया है।

सामाजिक मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, विचार के प्रक्रियाओं का मूल अध्ययन करता है, जैसे कि स्मृति कैसे काम करती है और लोग किन घटनाओं को नोटिस करते हैं। हाल के दशकों में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है, तथा सामाजिक मनोविज्ञान ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अनेक तरीकों जैसे कि संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को मापने के तरीकों के उपयोग को अपनाया। सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह अध्ययन करता है कि लोग अपने सामाजिक जीवन के बारे में कैसे सोचते हैं, वे अन्य लोगों के बारे में कैसे सोचते हैं या अपने सामाजिक जगत में समस्याओं को कैसे हल करते हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान और विकास मनोविज्ञान

विकासात्मक मनोविज्ञान इस बात का अध्ययन करता है कि कैसे लोग अपने जीवन में गर्भाधान और जन्म से लेकर वृद्धावस्था और मृत्यु के दौरान परिवर्तन लाते हैं। अधिकांश विकासात्मक मनोवैज्ञानिक बच्चों का अध्ययन करते हैं। विकासात्मक मनोविज्ञान के अध्ययन द्वारा बताया गया है कि किस उम्र में बच्चे सामाजिक व्यवहार के विभिन्न प्रतिरूप दिखाना शुरू करते हैं। स्व-विनियमन, भावना, लिंग अंतर, व्यवहार और असामाजिक व्यवहार में रुचि रखने वाले सामाजिक मनोवैज्ञानिक कभी-कभी बाल विकास पर भी शोध करते हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान और व्यक्तित्व मनोविज्ञान

व्यक्तित्व मनोविज्ञान व्यक्तियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर के साथ ही आंतरिक प्रक्रियाओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर पर केंद्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग अंतर्मुखी होते हैं और सामाजिक संपर्क से बचते हैं, जबकि अन्य लोग बर्हिमुखी होते हैं और सामाजिक संपर्क की तलाश करते हैं। सामाजिक और व्यक्तित्व मनोविज्ञान का एक लंबा और घनिष्ठ संबंध रहा है। यह संबंध कभी-कभी पूरक होता है। व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के अंदर देखते हैं, जबकि सामाजिक मनोवैज्ञानिक उनके बाहर की स्थिति को देखते हैं और कभी-कभी प्रतिस्पर्धी (व्यक्ति या स्थिति को समझना अधिक महत्वपूर्ण है) को देखते हैं। हाल के वर्षों में, इन दो क्षेत्रों के बीच की रेखा अतिव्यापी हो गई है, क्योंकि अब सामाजिक मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के आंतरिक प्रक्रियाओं के महत्व को पहचान रहे हैं और व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों और स्थितियों के महत्व को पहचान रहे हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

बताएँ कि क्या निम्नलिखित **'सत्य'** या **'असत्य'** हैं :

1) सामाजिक मनोवैज्ञानिकों यह अध्ययन करते है कि लोग अपने सामाजिक जीवन के बारे में कैसे सोचते हैं। ( )

2) सामाजिक अनुभूति दृष्टिकोण सामाजिक दुनिया, सोच और व्यवहार के प्रति हमारे ज्ञान की समझ पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है। ( )

3) सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में से कोई भी आर्थिक सिद्धांतों पर आधारित नहीं है। ( )

4) समाजशास्त्री और सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस बात में रुचि रखते हैं कि लोग समाजों और समूहों में कैसे व्यवहार करते हैं, वे किस पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह दोनों में भिन्न होता है। ( )

2.3 सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तर

सामाजिक मनोवैज्ञानिक मानव व्यवहार की जांच करते हैं लेकिन उनकी प्राथमिक चिंता सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहार है। इसके अलावा, सामाजिक मनोविज्ञान विभिन्न स्तरों पर मानव सामाजिक व्यवहार का विश्लेषण करता है, जिन्हें नीचे प्रस्तुत किया गया हैः

2.3.1 व्यक्तिगत-अंतरव्यक्तिक स्तर का विश्लेषण

व्यक्ति किसी भी सामाजिक संपर्क के मौलिक घटक होते हैं। मनोविज्ञान में अवधारणा है, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जैविक विरासत, विचार प्रक्रिया, प्रभाव और व्यवहार में अद्वितीय है। इसलिए, सामाजिक व्यवहार की बुनियादी स्तर का विश्लेषण व्यक्तिगत-अंतर्वैयक्तिक है जहाँ सामाजिक अनुभूति, मूल्य और दृष्टिकोण, सामाजिक अवमूल्यन और हिंसक व्यवहार जैसे पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

2.3.2 पारस्परिक सहभागिता

व्यक्ति कई तरह से दूसरों से प्रभावित होते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में, दूसरों से संचार, व्यक्ति की सामाजिक दुनिया की समझने में दूसरों से बातचीत का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अनुनय-विनय पर दूसरों के प्रयासों से व्यक्ति और समूह या अन्य वस्तुओं के प्रति दुनिया और उसके दृष्टिकोण के बारे में एक व्यक्ति की धारणा बदल सकती है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक कई अन्य पारस्परिक गतिविधियों जैसे सहयोग और प्रतियोगिता, परोपकारिता और आक्रामकता, पूर्वाग्रह और भेदभाव आदि का अध्ययन करते हैं।

2.3.3 व्यक्तिगत और समूह के बीच सहभागिता

सामाजिक मनोविज्ञान अपने व्यक्तिगत सदस्यों के व्यवहार पर समूह के प्रभाव का विश्लेषण करता है। प्रत्येक व्यक्ति कई अलग-अलग समूहों से संबंधित होता है और ये समूह अपने सदस्यों के व्यवहारों को आमतौर पर मानदंडों या नियमों को स्थापित करके प्रभावित करते हैं और उन्हें नियंत्रित करते हैं। इसका एक परिणाम अनुरूपता है, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा समूह का सदस्य, समूह के मानदंडों के अनुरूप लाने के लिए अपने व्यवहार को समायोजित करता है। समूह भी समाजीकरण के माध्यम से अपने सदस्यों पर पर्याप्त दीर्घकालिक प्रभाव डालते हैं, जिससे समूह को यह जानने में सक्षम होते हैं कि उनके सदस्य क्या सीखते हैं। समाजीकरण मानता है कि सदस्यों को समूह में और बड़े समाज में, भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। समाजीकरण के महत्वपूर्ण परिणाम भाषा कौशल, राजनीतिक और धार्मिक विश्वास तथा दृष्टिकोण और हमारे स्वयं के बारे में जानना है।

जैसे कोई समूह अपने सदस्यों के व्यवहार को प्रभावित करता है, वैसे ही सदस्य भी समूह को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, व्यक्ति समूह उत्पादकता और समूह निर्णय लेने में योगदान करते हैं। इसके अलावा, कुछ सदस्य सफल समूह प्रदर्शन के लिए आवश्यक कार्य, नियोजन, आयोजन और नियंत्रण जैसे कार्य करने के लिए नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। प्रभावी नेतृत्व के बिना, सदस्यों के बीच समन्वय लड़खड़ा जाएगा और समूह बहाव या विफल हो जाएगा।

2.3.4 समूहों के बीच बातचीत

सामाजिक मनोविज्ञान की दूसरी विषयवस्तु एक समूह की गतिविधियों और दूसरे समूह की संरचना पर प्रभाव के बारे में जानना है। दो समूहों के बीच संबंध दोस्ताना या शत्रुतापूर्ण, सहकारी या प्रतिस्पर्धी हो सकते हैं। ये रिश्ते, सदस्यों की पहचान पर आधारित होते हैं और समूह की रूढ़ियों को प्रभावित कर सकते हैं, प्रत्येक समूह की संरचना और गतिविधियों को प्रभावित कर सकते हैं। अंतर-समूह संघर्ष और उनमें तनाव और शत्रुता, सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन का एक मुख्य क्षेत्र रहा है। इस प्रकार के संघर्ष समूहों और प्रत्येक समूह के बीच पारस्परिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने लंबे समय तक अंतरग्रही संघर्ष के उद्भव, दृढ़ता और संकल्प का अध्ययन किया है।

2.4 सामाजिक मनोविज्ञान के लिए सैद्धांतिक दृष्टिकोण

सिद्धांत अंतरसंबंधित प्रस्तावों का एक समूह है, जो देखे गए घटनाओं का आयोजन और व्याख्या करता है। सामाजिक मनोविज्ञान में, कोई एकल सिद्धांत रुचि की घटनाओं की व्याख्या नहीं करता है बल्कि, इसे समझने के लिए कई अलग-अलग सिद्धांत शामिल हैं। सामाजिक मनोविज्ञान के विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण विभिन्न प्रकार की स्थितियों में सामाजिक व्यवहार की एक विस्तृत सारणी के लिए सामान्य स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं। किसी भी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य का मूल मूल्य कई स्थितियों में इसकी प्रयोज्यता में निहित है। यह सामाजिक स्थिति और व्यवहार की एक विस्तृत श्रृंखला की व्याख्या और तुलना के लिए संदर्भ का दायरा प्रदान करता है। सामाजिक मनोविज्ञान में दो प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण हैं: सीखने का सिद्धांत और संज्ञानात्मक सिद्धांत।

2.4.1 सीखने/अधिगम के सिद्धांत

सीखने (अधिगम) के सिद्धांत का केंद्रीय विचार यह है कि किसी व्यक्ति का वर्तमान व्यवहार उसके पूर्व अनुभव से अलग है। किसी भी स्थिति में, एक व्यक्ति कुछ व्यवहार सीखता है जो समय के साथ, आदत में परिवर्तित हो सकता है। जब एक समान स्थिति प्रस्तुत किया जाता है, तो व्यक्ति उसी अभ्यस्त तरीके से व्यवहार करता है। उदाहरण के लिए, जब कोई ट्रैफिक लाइट लाल हो जाती है, तो हम आमतौर पर रुक जाते हैं, क्योंकि हमने अतीत में इसका जवाब देना सीख लिया है। जैसा कि अल्बर्ट बंदुरा (1977) और अन्य लोगों द्वारा सामाजिक व्यवहार पर लागू किया गया था, इस दृष्टिकोण को सामाजिक शिक्षण सिद्धांत कहा गया है।

सीखने की प्रक्रिया तीन सामान्य तंत्र के द्वारा होती है, इनमें से एक संघ या शास्त्रीय (क्लासिकल) कंडीशनिंग है। शास्त्रीय कंडीशनिंग यह मानती है कि जब एक तटस्थ उत्तेजना (सशर्त उत्तेजना, CS) को एक प्राकृतिक उत्तेजना (बिना शर्त उत्तेजना,

UCS) के साथ जोड़ा जाता है जिससे अकेले तटस्थ उत्तेजना प्रतिक्रिया (सशर्त प्रतिक्रिया, CR) को ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त होती है जो स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक उत्तेजना (बिना शर्त उत्तेजना, UCS) के बाद बिना शर्त प्रतिक्रिया/UCR उत्पन्न होने लगती है। पावलोव के कुत्ते ने एक घंटी की आवाज पर लार निकालना सीखा क्योंकि उन्हें हर बार घंटी के बाद भोजन प्रस्तुत किया जाता था। यहाँ पर CS का तात्पर्य conditioned stimulus, UCS का तात्पर्य conditional stimulus, तथा CR एवं UCR का तात्पर्य conditional response और unconditional response से है। थोड़ी देर के बाद, वे मांस भोजन की अनुपस्थिति में भी घंटी की आवाज सुनते ही लार टपकाने लगे क्योंकि वे घंटी को मांस के साथ जोड़ते थे। मनुष्य कभी-कभी एसोसिएशन द्वारा भावनाओं को सीखते हैं (*पावलोव*, 1927)। किसी विशेष स्थान पर विशेष रूप से दर्दनाक यात्रा के बाद, जगह का मात्र उल्लेख चिंता पैदा कर सकता है।

एक दूसरा सीखने का तंत्र है सुदृढीकरण, यह सिद्धांत बी. एफ. स्किनर (1938) और अन्य द्वारा अध्ययन किया गया एक सिद्धांत है। लोग एक विशेष व्यवहार करना सीखते हैं क्योंकि इसके बाद कुछ ऐसा होता है जो आनंददायक होता है या जो एक आवश्यकता को पूरा करता है (या वे व्यवहार से बचने के लिए सीखते हैं जो अप्रिय परिणामों के बाद होते हैं)। एक बच्चा अन्य लोगों की मदद करना सीख सकता है जैसे कि जब उसके माता-पिता खिलौनों को साझा करने के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं और जब वह मदद करने की पेशकश करता है तो वे मुस्कुराते हैं।एक छात्र कक्षा में अपने शिक्षक से विरोधाभास नहीं करना सीख सकता है क्योंकि हर बार जब वह ऐसा करता है, तो शिक्षक तेवर दिखाता है, गुस्से में देखता है और उसे डांटता है।

एक तीसरा तंत्र अवलोकन संबंधी शिक्षण है। लोग अक्सर सामाजिक दृष्टिकोण और व्यवहार को दूसरे लोगों को देखकर सीखते हैं, जिन्हें तकनीकी रूप से ''मॉडल'' के रूप में कहा जाता है। बच्चे अपने आसपास के वक्ताओं को सुनकर क्षेत्रीय और जातीय भाषण के प्रतिरूप सीखते हैं। किशोरों को चुनाव प्रचार के दौरान अपने माता-पिता की बातचीत सुनकर अपने राजनीतिक दृष्टिकोण पर अपना विचार बनाते हैं। अवलोकन शिक्षा में, अन्य लोग सूचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। अवलोकन संबंधी अध्ययन बिना किसी बाहरी सुदृढीकरण के हो सकता है। हालांकि, जो व्यवहार व्यक्ति अवलोकन के माध्यम से सीखता है, वह उस व्यवहार के परिणाम के आधार पर ही उस व्यवहार को दोहराता है। उदाहरण के लिए, एक छोटा लड़का अपनी बहनों को देखने से बच्चे की गुड़िया के बारे में बहुत कुछ सीख सकता है, लेकिन खुद उनके साथ खेलने से हतोत्साहित हो सकता है क्योंकि उसके पारंपरिक माता-पिता कहते हैं, ''गुड़िया लड़कों के लिए नहीं है''। नकल या मॉडलिंग तब होता है जब कोई व्यक्ति न केवल देखता है, बल्कि एक मॉडल के व्यवहार को दर्शाता है और उसे दोहराता है। शिक्षण दृष्टिकोण, व्यक्ति के व्यवहार के कारणों को पिछले सीखे गये व्यवहारों के द्वारा समझने की कोशिश करता है।

सुदृढीकरण के सिद्धांत पर आधारित एक और महत्वपूर्ण प्रक्रिया सामाजिक आदान-प्रदान है। सामाजिक विनिमय सिद्धांत (*केली* और *थिबॉट*, 1978) के अनुसार व्यक्तियों संबंधों में स्थिरता और परिवर्तन की व्याख्या करने के लिए सुदृढीकरण की अवधारणा का उपयोग करता है। यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्तियों को चुनने/चयन की स्वतंत्रता (फ्रीडम ऑफ चॉइस) है और अक्सर उन सामाजिक परिस्थितियों का सामना

करना पड़ता है जिनमें उन्हें वैकल्पिक कार्यों के बीच चयन करना चाहिए। कोई भी कार्रवाई कुछ पुरस्कार प्रदान करती है और कुछ लागतों को पूरा करती है। सामाजिक रूप से मध्यस्थता के कई प्रकार के पुरस्कार हैं, जैसे कि धन, सामान, सेवाएँ, प्रतिष्ठा या स्थिति, दूसरों द्वारा अनुमोदन आदि। यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्ति स्वेच्छाचारी होते हैं और वे पुरस्कार को अधिकतम करने और लागत को कम करने की कोशिश करते हैं। नतीजतन, वे ऐसे कार्यों का चयन करते हैं जो अच्छे मुनाफे का उत्पादन करते हैं और उन कार्यों से बचते हैं जो खराब मुनाफे का उत्पादन करते हैं। इस प्रकार, सामाजिक विनिमय सिद्धांत, मुख्य रूप से व्यक्तियों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के रूप में सामाजिक बातचीत को देखता है। यदि वे पाते हैं कि एक विशेष बातचीत लाभदायक परिणाम प्रदान कर रही है, तो वे खुशी से रिश्ते में भाग लेते हैं। इसके अलावा, किसी रिश्ते के आकर्षण की तुलना उस लाभ के आधार पर की जाती है जो उसे अन्य वैकल्पिक रिश्तों में उपलब्ध मुनाफे के खिलाफ प्रदान करता है। यदि कोई व्यक्ति किसी सामाजिक संबंध में भाग ले रहा है और कुछ परिणाम प्राप्त कर रहा है, तो सर्वोत्तम वैकल्पिक परिणामों के आधार पर विकल्प को चुनने की प्रवृत्ति को उस व्यक्ति के विकल्प स्तर की तुलना कहा जाता है। इस प्रकार की अवधारणाएँ न केवल कार्य संबंधों पर बल्कि व्यक्तिगत संबंधों पर भी लागू होती हैं। पुरस्कार अधिक होने पर लोग सामाजिक संबंधों के साथ रहने की अधिक संभावना रखते हैं, लागत कम होती है, और विकल्प अप्रभावी होते हैं।

इन सिद्धोंतों के उपयोगिता जैसे कि रिश्ते क्यों बदलते हैं और लोग कैसे सीखते हैं, के बावजूद सीखने के सिद्धांतों की विभिन्न आधारों पर आलोचना की गई है। एक आलोचना यह है कि सीखने के सिद्धांत व्यक्तियों को मुख्य रूप से पर्यावरणीय उत्तेजनाओं की प्रतिक्रिया या नकल के रूप में चित्रित करते हैं। सिद्धांत रचनात्मकता, नवाचार, या आविष्कार के कारणों का उल्लेख नहीं करता। दूसरी आलोचना यह है कि सुदृढीकरण सिद्धांत मुख्य रूप से अन्य प्रेरणाओं को अनदेखा करता है। यह सामाजिक व्यवहार को हेंडोनिस्टिक के रूप में चिह्नित करता है, जिसमें परिणामों से लाभ को अधिकतम करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार, यह सिद्धांत परोपकार और शहादत जैसे निस्वार्थ व्यवहार की व्याख्या नहीं कर सकता है। अपनी सीमाओं के बावजूद, सुदृढीकरण सिद्धांत ने यह समझाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है कि क्यों व्यक्ति कुछ व्यवहारों का अनुकरण करने में बना रहता है, वे नए व्यवहार कैसे सीखते हैं और वे विनिमय के माध्यम से दूसरों के व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।

2.4.2 संज्ञानात्मक सिद्धांत

सामाजिक मनोविज्ञान में एक और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य संज्ञानात्मक सिद्धांत है। संज्ञानात्मक सिद्धांत यह मानता है कि व्यक्ति की मानसिक गतिविधियाँ, सामाजिक व्यवहार के महत्वपूर्ण निर्धारक होते हैं। मानसिक गतिविधियों को संज्ञानात्मक प्रक्रिया कहा जाता है जिसमें धारणा, स्मृति, निर्णय, समस्या को हल करना और निर्णय लेना शामिल है। संज्ञानात्मक सिद्धांत बाहरी उत्तेजनाओं के महत्व से इनकार नहीं करता है, लेकिन यह बताता है कि उत्तेजना और प्रतिक्रिया के बीच का संबंध यांत्रिक या स्वचालित नहीं होता है। बल्कि, व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्रक्रिया बाहरी उत्तेजनाओं और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं के बीच हस्तक्षेप करती है। व्यक्ति न केवल उत्तेजना के अर्थ

को सक्रिय रूप से व्याख्या करते हैं, बल्कि प्रतिक्रिया में किए जाने वाले कार्यों का भी चयन करते हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान के संज्ञानात्मक दृष्टिकोण, मनोविज्ञान के गेस्टाल्ट आंदोलन के कोफ्का, कोहलर और अन्य सिद्धांतकारों के विचारों से प्रभावित हुए हैं। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान वह सिद्धांत है जो यह बताता है कि लोग एकल, असतत उत्तेजना के बजाय उत्तेजनाओं के विन्यास को समझ पाते हैं। दूसरे शब्दों में, लोग एक उत्तेजना के अर्थ को केवल तत्वों की एक संपूर्ण प्रणाली (गेस्टाल्ट) के संदर्भ में देखते हैं, जिसमें यह समाहित है। किसी भी तत्व के अर्थ को समझने के लिए, हमें उस पूरे भाग को देखना चाहिए, जिसमें वह मात्र एक हिस्सा होता है।

आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार, उत्तेजनाओं को चुनने और व्याख्या करने में सक्रिय रूप से मनुष्यों को चित्रित करते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, लोग केवल अपने पर्यावरण पर प्रतिक्रिया नहीं करते हैं वे सक्रिय रूप से अपनी दुनिया को संज्ञानात्मक रूप से संरचना करते हैं। सबसे पहले, क्योंकि वे संभवतः सभी जटिल उत्तेजनाओं को एक ही बार में समझ नहीं सकते जो उन्हें घेरते हैं, वे केवल उन उत्तेजनाओं का चयन करते हैं जो उनके लिए महत्वपूर्ण या उपयोगी होते हैं और दूसरी उत्तेजनाओं की उपेक्षा करते हैं। दूसरा, वे सक्रिय रूप से नियंत्रित करते हैं कि पर्यावरण में उत्तेजनाओं की व्याख्या करने के लिए वे किन श्रेणियों या अवधारणाओं का उपयोग कर सकते हैं।

संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य की अवधारणा केंद्रीय संज्ञानात्मक संरचना है, जो व्यापक रूप से अनुभूति, अवधारणाओं और मान्यताओं के बीच संगठन के किसी भी रूप को संदर्भित करता है। क्योंकि किसी व्यक्ति के संज्ञानों का एक दूसरे से संबंध होता है, संज्ञानात्मक सिद्धांत इस बात पर विशेष जोर देता है कि संज्ञान कैसे संरचित और स्मृति में व्यवस्थित होते हैं और वे किसी व्यक्ति के निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं।

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने प्रस्तावित किया है कि व्यक्ति, विशिष्ट संज्ञानात्मक संरचनाओं का उपयोग करते हैं जिन्हें **स्कीमा** कहा जाता है जो अन्य व्यक्तियों, समूहों और स्थितियों के बारे में जटिल जानकारी का एहसास कराता है। **स्कीमा** शब्द से तात्पर्य उस रूप या मूल रेखा से है जो हम लोगों और चीजों के बारे में जानते हैं। जब भी हम किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं, तो हम आमतौर पर उसकी अवधारणा (इम्प्रेशन) बनाते हैं। ऐसा करने में, हम न केवल उस व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करते हैं, बल्कि हमारे अतीत में मिले उसके जैसे व्यक्तियों का ध्यान में रखते हैं। हम इस प्रकार व्यक्ति के बारे में अपने स्कीमा का उपयोग करते हैं। **स्कीमा** हमें बातचीत के द्वारा यह पहचानने में तथा जानकारियों को संशोधित करने में मदद करती है कि किसी व्यक्ति की, कौन सी व्यक्तिगत विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं और कौन सी नहीं। वे व्यक्ति के बारे में जानकारी को संरचना और व्यवस्थित करते हैं, और वे हमें जानकारी को बेहतर ढंग से याद करने और इसे और अधिक तेजी से संशोधित करने में मदद करते हैं। कभी-कभी वे ज्ञान के अंतराल को भरते हैं और हमें दूसरों के बारे में निष्कर्ष और निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।

संज्ञानात्मक संरचना का अध्ययन करने का एक तरीका यह है कि किसी व्यक्ति के संज्ञान में होने वाले परिवर्तनों का अवलोकन किया जाए, जब वह व्यक्ति चुनौती या हमले के अधीन है। उस स्थिति में होने वाले परिवर्तन उसके या उसके संज्ञान की

अंतर्निहित संरचना या संगठन के बारे में तथ्यों को प्रकट करेंगे। इस दृष्टिकोण से उभरने वाला एक महत्वपूर्ण विचार संज्ञानात्मक स्थिरता का सिद्धांत है जिसके अनुसार व्यक्ति उन विचारों को धारण करने का प्रयास करते हैं जो एक दूसरे के साथ संगत या कृतज्ञ हैं, विचारों के बजाय असंगत हों। यदि कोई व्यक्ति कई विचार रखता है जो असंगत या असंगत हैं, तो वह आंतरिक संघर्ष का अनुभव करेगा। प्रतिक्रिया में, वह संभवतः एक या एक से अधिक विचारों को बदल देगा, जिससे उन्हें निरंतर इस संघर्ष को हल करने में मदद मिलेगी।

संज्ञानात्मक सिद्धांत ने सामाजिक मनोविज्ञान में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। यह इस तरह की विविध घटना जैसे कि आत्म-अवधारणा, व्यक्तियों की धारणा और कारणों के प्रति दृष्टिकोण, दृष्टिकोण में परिवर्तन, प्रभाव प्रबंधन और समूह स्टीरियोटाइप के रूप में मानता है। इन संदर्भों में, संज्ञानात्मक सिद्धांत ने व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार के संबंध में कई अंतर्दृष्टि और परिणामों को प्रदान किया है। संज्ञानात्मक सिद्धांत की एक सीमा यह है कि यह एक अंतर्निहित घटना को अत्यंत ही सरल बनाता है, कि किस तरह से लोग किसी जानकारी की प्रक्रिया को दिखाते हैं जो अत्यंत जटिल घटना होती है। एक और सीमा यह है कि संज्ञानात्मक घटनाएँ प्रत्यक्ष रूप से दिखते नहीं हैं, लोग क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसका उन्हें अनुमान लगाना पड़ता है। इसका मतलब यह है कि संज्ञानात्मक सिद्धांत से सैद्धांतिक भविष्यवाणियों के सम्मोहक और निश्चित परीक्षण कभी-कभी आचरण करने में मुश्किल होते हैं। हालांकि, सामाजिक मनोविज्ञान में संज्ञानात्मक दृष्टिकोण अधिक लोकप्रिय और उत्पादक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है।

2.5 सामाजिक मनोविज्ञान में अनुसंधान की विधियाँ

हर वैज्ञानिक जाँच एक सवाल से शुरू होती है। अनुसंधानिक किसी व्यावहारिक समस्या या सैद्धांतिक रुचि से निर्धारित किया जा सकता है। सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान के बीच का अंतर गुणात्मक ही नहीं, बल्कि डिग्री (degree) की बात है (*फेल्डमैन* 1985: 21)। सामाजिक मनोविज्ञान में शुद्ध सैद्धांतिक प्रक्रिया का उद्देश्य, सामाजिक दुनिया के बारे में ज्ञान और तथ्यों के एक बुनियादी निकाय का निर्माण करना है। जबकि अनुप्रयुक्त अनुसंधान तात्कालिक समस्याओं के तत्काल समाधान प्रदान करने के लिए होते है। लेकिन दोनों शोधों में एक दूसरे के लिए प्रासंगिकता होती है। यहाँ तक कि सबसे अधिक लागू अध्ययनों के परिणामों को न केवल उनके लिए समस्या के तात्कालिक अनुप्रयोगों के लिए बल्कि सिद्धांत के लिए भी उनका उपयोग किया जाता है। दूसरी ओर, सिद्धांत समाज की समस्याओं से निपटने के लिए नए दृष्टिकोण और रणनीतियों का सुझाव देने में सक्षम हैं। लेकिन सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान में तरीकों का अंतर है। सैद्धांतिक अध्ययन ज्यादातर प्रयोगशालाओं में किए जाते हैं तथा प्रयोग और अनुप्रयुक्त शोध प्राकृतिक क्षेत्र सेटिंग्स पर आधारित होते हैं। लेकिन दोनों का लक्ष्य एक ही है, "ज्ञान का निर्माण, जीवन की गुणवत्ता के बारे में चिंता और सामाजिक मनोविज्ञान का ज्ञान आखिरकार के उपयोगों का विश्लेषण" (*फेल्डमैन*)।

हालांकि इन लक्ष्यों के लिए मार्ग अलग अलग हो सकते हैं, एक विशेष सामाजिक मनोवैज्ञानिक के उन्मुखीकरण के आधार पर, सिद्धांत और अनुसंधान के बीच का तालमेल पाया जाता है। "मनोविज्ञान के क्षेत्रों में कई मनोवैज्ञानिक सैद्धांतिक और

व्यावहारिक मनोविज्ञान के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता से अवगत हैं तथा इसे मनोविज्ञान में पूरा किया जा सकता है। ''... अगर सिद्धांतवादी उच्च भौंह फैलाव के साथ या सामाजिक समस्याओं के डर से समस्याओं की ओर नहीं देखता है, और यदि मनोवैज्ञानिक को पता चलता है कि एक अच्छे सिद्धांत के रूप में कुछ भी व्यावहारिक नहीं है" (*लुईस* 1951, : 169)।

हमारी चर्चा निम्नलिखित शोध विधियों तक सीमित रहेगी:

2.5.1 अवलोकन विधि (Observational Method)

अवलोकन सामाजिक मनोविज्ञान की पुरानी पद्धति है। इस पद्धति के लिए कई शोधकर्ताओं ने विभिन्न शब्दों और श्रेणियों का उपयोग किया है, जैसे व्यवस्थित अवलोकन (*मॉर्गन* और *किंग*) की विधि, प्रत्यक्ष अवलोकन (*हिलगार्ड* और *एटकिंसन*) और फेल्डमैन ने इसे क्षेत्र अध्ययन के रूप में शामिल किया है। अवलोकन द्वारा किसी घटना को देखना और अध्ययन किया जाता है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप से होता है (*हिलगार्ड* और *एटकिंसन* 2003: 21)। यह पद्धति अति व्यवहार (overt behaviour) और व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्यों पर डेटा के संग्रह (Data collection) में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पद्धति के आवेदन में निम्नलिखित समस्याएँ होती हैं: क्या निरीक्षण करना है? टिप्पणियों को कैसे ठीक करें? अवलोकन कैसे करें? सामाजिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में अवलोकन की इकाइयाँ और अवलोकन के लिए समय का निश्चित अंतराल क्या होना चाहिए? यह विधि निम्नलिखित दो चरणों में आगे बढ़ती है:

व्यवहार का वर्णन: यह विधि प्राकृतिक सेटिंग में व्यवहार के अवलोकन से शुरू होती है जो अनुसंधान के लिए प्रासंगिक है। अवलोकन इन सवालों पर आधारित हो सकता है जैसे लोग क्या करते हैं? क्या विभिन्न व्यवहारों को व्यवस्थित तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है? लोगों के व्यवहार में क्या भिन्नताएँ है?

विवरणों से लेकर कारणों तक: व्यवस्थित अवलोकन की विधि हमें बताती है कि लोग क्या करते हैं और उनके व्यवहार कैसे भिन्न होते हैं। इसका उपयोग यह जानने के लिए भी किया जा सकता है कि देखे गए व्यवहारों का क्या कारण है। लेकिन अवलोकन से कारणों का उल्लेख करने में हमें सतर्क रहना चाहिए।

एक व्यवहार के कई कारण हो सकते हैं; जैसे कि:

एक घटना किसी अन्य घटना से पहले आती है, पर यह नहीं पता चलता कि पहली घटना बाद वाले घटना का कारण है।

सरल व्यवहार के संभावित कारणों को भी स्थापित करने के लिए, कई बार किये गये अवलोकन की आवश्यकता होती है।

अधिक जटिल व्यवहारों के लिए, संभावित कारण को स्थापित करना अधिक कठिन है। इस प्रकार एक विशेष व्यवहार के पाठ्यक्रम का पता लगाने के लिए, हमें किसी विशेष कारक के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, कई बार किये गये अवलोकन के संख्याओं के परिणाम को ध्यान से देखना चाहिए।

अवलोकन पद्धति अपेक्षाकृत, अनौपचारिक और असंरचित हो सकती है या यह औपचारिक और संरचित भी हो सकती है किन्तु दोनों का मूल सार सामाजिक व्यवहार

के जटिल प्रवाह से जानकारी को सार करना जो कि अनुसंधान प्रश्नों के लिए संभावित महत्व के हैं; और कुछ अवधि में इस तरह के कार्यों के प्रत्येक उदाहरण को रिकॉर्ड करना होता है (*मैनस्टेड ए. एस. आर. सेमिन जी. आर.* 2001: 97)। Festinger Riecken एवं Schachter ने दृढ़ विश्वासों पर आधारित असंतोषपूर्ण व्यवहारों का 1956 में अध्ययन किया।

जाँचकर्ताओं ने एक ऐसे धार्मिक संप्रदाय की पहचान की, जिसने भविष्यवाणी की थी कि एक निश्चित तारीख को उत्तरी गोलार्ध बाढ़ से नष्ट हो जाएगा। उस संप्रदाय में शामिल होने से, शोध टीम के सदस्य यह देख पाने में सक्षम थे कि जब भविष्यवाणी की गई घटनाओं को अमल में लाने में लोग असफल हो रहे हो तो क्या होता है?

इसे प्रतिभागी अवलोकन कहा जाता है। इस तरह के अवलोकन में शोधकर्ता लोगों द्वारा की जा रही गतिविधियों में भाग लेते हैं।

अवलोकन की औपचारिक विधियों का उपयोग तब किया जा सकता है जब व्यवहार की घटना को बिना प्रतिबंधित किये बिना प्रासंगिक क्रियाओं को रिकॉर्ड कर अनुसंधान के प्रश्नों का उत्तर और ढूंढ़ा जाना संभव हो। गैर प्रतिभागी अवलोकन में पर्यवेक्षक लोगों के व्यवहार को रिकॉर्ड करते हैं लेकिन वास्तव में उनकी गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं। सबसे औपचारिक प्रकार की वो अवलोकन पद्धतियाँ है जिसमें शोधकर्ता सामाजिक व्यवहारों को बनाए रखने के लिए एक पूर्व निर्धारित श्रेणी प्रणाली का उपयोग करता है।

डेटा संग्रह (data collection) के अवलोकन संबंधी तरीकों का सेल्फ रिपोर्ट के तरीकों कि तुलना में दो मुख्य फायदे हैं– इन्हें अक्सर स्वाभाविक रूप से होने वाले व्यवहारों को प्रतिबंधित किए बिना किया जा सकता है। यहां तक कि जहाँ लोगों को पता है कि उनके व्यवहार का अध्ययन हो रहा है, वहां उनका व्यवहार काफी गहरा हो जाता है।

फिर भी, कुछ प्रकार के व्यवहार हैं जिनका या तो सीधे निरीक्षण करना असंभव है (क्योंकि वे अतीत में हुए थे) या सीधे निरीक्षण करना मुश्किल है (क्योंकि वे आमतौर पर निजी रूप से अधिनियमित होते हैं)। इसके अलावा, सामाजिक मनोवैज्ञानिक अक्सर लोगों की धारणाओं, संज्ञान या मूल्यांकन को मापने में रुचि रखते हैं, जिनमें से किसी का भी केवल अवलोकन के माध्यम से सीधे मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। उस समय सेल्फ रिपोर्ट उपायों या अन्य तकनीकों के लिए अक्सर उपयोग किया जाता है।

2.5.2 प्रायोगिक विधि

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोग प्रमुख अनुसंधान पद्धति रही है, इसका मुख्य कारण यह है कि यह बिना वैचारिक सिद्धांतों के परीक्षण के लिए एक विधि के समान है जो चरों के बीच कारण के संबंधों की भविष्यवाणी करते हैं। किसी प्रयोग का लक्ष्य यह देखना है कि किसी घटना में क्या होता है, जैसे कि आज्ञाकारिता, जब शोधकर्ता जानबूझकर उस वातावरण की कुछ विशेषताओं को संशोधित करता है जिसमें घटना होती है (अर्थात, यदि चर A को बदल दिया जाता है, तो B में परिणामी परिवर्तन होंगे)। हम प्रायोगिक अनुसंधान के कुछ बुनियादी अवधारणाओं के अर्थ नीचे दी गई तालिका में देख सकते हैं।

तालिका 2.1: प्रायोगिक अनुसंधान की शब्दावली

प्रयोग / Experiment	कारणात्मक कारक के बारे में परिकल्पना का अच्छी तरह से नियत्रित परीक्षण
परिकल्पना / Hypothesis	एक कथन, जिसका कारण और प्रभाव के विषय में परीक्षण किया जा सकता है।
चर / Variable	विभिन्न मानों के साथ हो सकता है तथा जिसे मापा जा सकता है।
स्वतंत्र चर / Independent Variable	एक चर, जो परिकल्पना के कारण का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रयोगकर्ता द्वारा नियत्रित किया जाता है प्रयोजय क्या करता है इससे स्वतंत्र रहता है।
आश्रित चर / Dependent Variable	एक चर, जो परिकल्पना प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है जिसका मान अंततः स्वतंत्र चर के मान पर निर्भर करता है।
प्रायोगिक समूह / Experimental Group	एक समूह, जिसमें परिकल्पना परीक्षण के कारण उपलब्ध होते हैं।
नियंत्रित समूह / Control Group	एक समूह जिसमें परिकल्पना प्रभाव उपलब्ध है।
आँकड़े / Statistics	निश्चिता निर्धारित करने के लिए गणितीय तकनीक जिसके साथ आँकड़ों का एक निर्देश सामान्यीकरण करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।
माप / Measurement	चरों के विभिन्न मानों के लिए संख्या निर्दिष्ट करने के लिए प्रणाली।
यार्दच्छिक / Random Assignment	प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूहों को प्रयोज्यों का चयन करने के लिए एक प्रणाली ताकि प्रत्येक प्रयोज्य को किसी भी समूह समान संभावना हो।

स्रोतः Atkinson& Hilgard et al (2003) Introduction to Psychology 14th edition. Wadsworth Asia Pvt Ltd.

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोगशाला और प्राकृतिक प्रयोगशाला के दो बुनियादी प्रकार के प्रयोग होते हैं और प्राकृतिक प्रयोगों के अपने विशेष नियम हैं। प्रयोगशाला का प्रयोग सामाजिक मनोवैज्ञानिक चर्चाओं में विशेष रुचि रखता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक कुछ विविधताओं (Variations) का उपयोग करते हैं। इनमें से दो सबसे आम विविधताएं हैं– अर्ध–प्रयोग और सच्चे यादृच्छिक प्रयोग (Quasiexperiments & true randomized experiment)। ये दो विधियाँ उस सेटिंग के यथार्थवाद के संबंध में भिन्न होती हैं जिसमें डेटा एकत्र किया जाता है, और उस सेटिंग पर शोधकर्ता के नियंत्रण की डिग्री में भी भिन्न होती है।

2.5.2.1 अर्ध–प्रयोगात्मक विधि (Quasi Experimental Design)

अर्ध–प्रयोग एक प्राकृतिक, रोजमर्रा की जीवन सेटिंग जीवन शैली में किया जाता है, जिस पर शोधकर्ता का पूर्ण नियंत्रण नहीं होता है। सेटिंग पर नियंत्रण की कमी इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि यह रोजमर्रा की जीवन सेटिंग है। यहां सेटिंग का यथार्थ (realism) अपेक्षाकृत अधिक होता है, नियंत्रण (control) अपेक्षाकृत कम होता है। इसके विपरीत सही यादृच्छिक प्रयोग वह है जिसमें शोधकर्ता को सेटिंग की प्रमुख विशेषताओं पर पूर्ण नियंत्रण होता है। हालांकि, नियंत्रण की इस डिग्री में अक्सर यथार्थवाद की कमी हो जाती है। कभी–कभी रोज़मर्रा की सेटिंग में सच्चे यादृच्छिक का प्रयोग करना संभव है; इसे क्षेत्र प्रयोग कहा जाता है।

2.5.2.2 प्रायोगिक डिजाइन (Experimental Design)

एक प्रयोग में, यह महत्वपूर्ण है कि: (1) प्रयोग करने वाला प्रायोगिक सेटिंग के सभी सैद्धांतिक रूप से अप्रासंगिक विशेषताओं को स्थिर रखता है, बस प्रमुख स्वतंत्र चर का जोड़–तोड़ (घटाता या बढ़ाता है) करता है; और (2) प्रतिभागियों को प्रयोग की विभिन्न स्थितियों के लिए यादृच्छिक रूप से आवंटित किया जाता है। एक सच्चे प्रयोगात्मक डिजाइन को Post test only control group डिजाइन के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के डिजाइन में प्रतिभागियों के दो समूहों में से एक को यादृच्छिक रूप से आवंटित किया जाता है। एक समूह स्वतंत्र चर (प्रयोगात्मक समूह) के संपर्क में होता है और दूसरा (नियंत्रण समूह) को स्वतंत्र चर नहीं दिया जाता है। दोनों समूहों का मूल्यांकन स्वतंत्र चर को प्रभाव के आधार पर किया जाता है और इस माप पर दो समूहों की तुलना इंगित करती है कि स्वतंत्र चर का प्रभाव था या नहीं।

सामाजिक मनोविज्ञान में कई प्रकार के प्रायोगिक डिजाइन का उपयोग किया जाता है, जो उपरोक्त की तुलना में अधिक परिष्कृत और जटिल हैं। प्रत्येक डिज़ाइन संभावना को नियंत्रित करने के लिए एक और अधिक पूर्ण प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है जो कि स्वतंत्र चर के हेरफेर के अलावा कुछ और से उत्पन्न स्थितियों के द्वारा के हुए अंतर को दिखलाता हैं।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक फैक्टरियल प्रयोग (factorial experiment) कभी प्रयोग करते हैं, जिसमें दो या दो से अधिक स्वतंत्र होते हैं तथा एक ही अध्ययन के भीतर चर में हेरफेर किया जाता है। फैक्टरियल डिज़ाइन का मुख्य लाभ यह है कि यह शोधकर्ता को दो या अधिक स्वतंत्र चर के अलग और संयुक्त प्रभावों की जाँच करने की संभावनाएँ देता है। प्रत्येक स्वतंत्र चर के अलग–अलग प्रभावों को मुख्य प्रभावों (main effects) के रूप में जाना जाता है। इंटरैक्शन प्रभाव उपयोग फैक्टरियल प्रयोग में दो (या अधिक) स्वतंत्र चर के संयुक्त प्रभाव से उत्पन्न एक पैटर्न को कहा जाता है जो मुख्य प्रभावों के योग से भिन्न होता है।

2.5.3 अनुसंधान विधियों में नैतिक मुद्दे

कुछ निश्चित नैतिकताएँ हैं जो एक शोधकर्ता को अनुसंधान करते समय ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है। उनमें से कुछ निम्नानुसार इंगित किए जा सकते हैं:

- **सूचित सहमति (Informed consent)**: यह शोधकर्ता का कर्तव्य है कि वह प्रतिभागियों को इस बारे में सूचित करे कि उन पर कौन सा प्रयोग या परीक्षण

किया जाएगा और वे विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद ही प्रतिभागियों को अपनी सहमति दे सकते हैं।

- **डिब्रीफ (Debrief)**: यह एक प्रक्रिया है, जो प्रतिभागियों पर प्रयोग या अनुसंधान के बाद की जाती है। शोधकर्ता एक संरचित या अर्ध–संरचित साक्षात्कार आयोजित करता है और शोध के विवरणों पर चर्चा करता है और साथ ही प्रतिभागियों को उनसे सवाल पूछने का मौका देता है।
- **प्रतिभागियों की सुरक्षा (Protection fo participants)**: एक शोधकर्ता की प्रतिभागी को सुरक्षित रखना अनिवार्य होता है। प्रतिभागियों के अधिकारों का कोई व्यक्तिगत नुकसान या उल्लंघन नहीं होना चाहिए।
- **धोखा (Deception)**: शोधकर्ता को अनुसंधान की विधि, जाँच, विश्लेषण और व्याख्या को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करना चाहिए। प्रतिभागियों से कोई भी जानकारी या विधि में धोखा नहीं दी जा सकती।
- **गोपनीयता (Confidential)**: प्रतिभागियों की व्यक्तिगत जानकारी और अन्य विवरण को पूरी तरह से गोपनीय रखा जाना चाहिए और इसका खुलासा नहीं किया जा सकता है, जब तक कि इसमें कई कानूनी मुद्दे शामिल न हों।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न II

बताएँ कि निम्नलिखित में से कौन से वाक्य **'सत्य'** या **'असत्य'** हैं :

1) सामाजिक मनोवैज्ञानिकों की प्राथमिक चिंता एक सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहार का अध्ययन करना है। ( )

2) सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तिगत सदस्यों के व्यवहार पर, समूह के प्रभाव की जाँच नहीं करता है। ( )

3) संज्ञानात्मक सिद्धांत यह मानता है कि व्यक्ति की मानसिक गतिविधियाँ किसी सामाजिक व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक नहीं हैं। ( )

4) सीखने के सिद्धांत में केंद्रीय विचार यह है कि किसी व्यक्ति का वर्तमान व्यवहार उसके पूर्व अनुभव से अलग होता है। ( )

2.6 सारांश

उपरोक्त चर्चा से यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान एक ऐसा क्षेत्र है जो हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहार का विश्लेषण करता है। वह यह भी बताता है कि हमारे व्यवहार पर दूसरों का क्या प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न स्तरों पर मानव सामाजिक व्यवहार की जाँच करते हैं। मुख्य रूप से, ये स्तर सामाजिक व्यवहार, व्यक्तियों के बीच तालमेल, व्यक्ति और समूह के बीच तालमेल और समूह और समूह के बीच तालमेल होते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान में दो प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण अधिगम सिद्धांत और संज्ञानात्मक सिद्धांत सीख रहे हैं। सुदृढ़ीकरण अधिगम सिद्धांत का यह मानना है कि सामाजिक व्यवहार बाहरी घटनाओं से नियंत्रित होता है। इसका केंद्रीय प्रस्ताव यह है कि लोगों को एक विशिष्ट व्यवहार करने की अधिक संभावना होगी यदि इसके बाद कुछ सुखद हुआ हो। इसी तरह, लोगों को किसी विशेष व्यवहार का प्रदर्शन नहीं करते हैं यदि उसका

दुष्परिणाम हुआ हो। संज्ञानात्मक दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि किसी व्यक्ति का व्यवहार उस स्थिति पर निर्भर करता है जो वह सामाजिक स्थिति को कैसे समझता है। संज्ञानात्मक सिद्धांतों का मानना है कि मानसिक गतिविधियों को व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्रक्रिया कहा जाता है, सामाजिक व्यवहार के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। इन मानसिक गतिविधियों में धारणा, स्मृति, निर्णय, समस्या समाधान और निर्णय लेना शामिल हैं।

2.7 इकाई के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

1) स्पष्ट करें कि सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञान और मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं के अन्य विषयों के साथ कैसे संबंधित है।
2) सामाजिक मनोविज्ञान में सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तरों को स्पष्ट करें।
3) सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने के दृष्टिकोण के रूप में सीखने के सिद्धांतों को पर चर्चा करें।
4) सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने के दृष्टिकोण के रूप में संज्ञानात्मक सिद्धांतों पर चर्चा करें।

2.8 शब्दावली

शास्त्रीय कंडीशनिंग : शास्त्रीय कंडीशनिंग यह मानती है कि जब एक तटस्थ उत्तेजना (सशर्त/शर्त के साथ उत्तेजना, सीएस) को एक प्राकृतिक उत्तेजना (बिना शर्त उत्तेजना, यूसीएस) के साथ जोड़ा जाता है, तो तटस्थ उत्तेजना अकेले प्रतिक्रिया (सशर्त प्रतिक्रिया, सीआर) को ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करती है जो स्वाभाविक रूप से होती है (प्राकृतिक उत्तेजना के बाद बिना शर्त प्रतिक्रिया, यूसीआर)।

सुदृढीकरण : सुदृढीकरण वह तंत्र है, जिसके द्वारा लोग एक विशेष व्यवहार को सीखते हैं क्योंकि इसके बाद कुछ ऐसा होता है जो आनंददायक होता है या जो किसी आवश्यकता को संतुष्ट करता है (या वे व्यवहार से बचने के लिए सीखते हैं जिनका परिणाम अप्रिय होता हैं)।

ऑब्जर्वेशनल लर्निंग : ऑब्जर्वेशनल लर्निंग मानती है कि लोग अक्सर अन्य लोगों को देखकर सामाजिक रूप से व्यवहार सीखते हैं, जिन्हें तकनीकी रूप से "मॉडल" के रूप में जाना जाता है।

सोशल एक्सचेंज थ्योरी : सोशल एक्सचेंज थ्योरी सुदृढ़ता की अवधारणा का उपयोग करती है ताकि स्थिरता और व्यक्तियों के बीच सामाजिक संबंधों और संबंधों में बदलाव को समझाया जा सके।

सोशल कॉग्निटिव थ्योरीज : सोशल कॉग्निटिव थ्योरीज इस बात पर जोर देती हैं कि किसी व्यक्ति का व्यवहार उस स्थिति पर निर्भर करता है, जिस पर वह सामाजिक स्थिति को मानता है।

स्कीमा : स्कीमा एक मानसिक प्रतिनिधित्व है, जो एक विशेष वर्ग के एपिसोड, घटनाओं या व्यक्तियों की सामान्य विशेषताओं को कैप्चर करता है।

संज्ञानात्मक संगति का सिद्धांत : संज्ञानात्मक संगति का सिद्धांत इस बात को बनाए रखता है कि व्यक्ति ऐसे विचारों को धारण करने का प्रयास करते हैं जो एक दूसरे के साथ संगत या बधाई देने वाले होते हैं, न कि उन विचारों के बजाय जो असंगत हैं।

2.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न I

1) सत्य
2) असत्य
3) असत्य
4) सत्य

स्व-मूल्यांकन प्रश्न II

1) सत्य
2) असत्य
3) असत्य
4) सत्य

2.10 सुझाए गए पठन और संदर्भ

Kassin, S., Fein, S., & Markus, H. R. (2017). *Social psychology (10th ed.)*, Cengage Learning.

Baron, R. A., & Branscombe, N. R. (2016). *Social psychology (14th ed.)*, Boston: Pearson/Allyn& Bacon.

References

Adinarayan, S. P. (1953). Before and after Independence – A study of racial and communal attitudes in India. *British Journal of Psychology, 44*, 108-115.

Adinarayan, S.P. (1957). A study of racial attitudes in India. *Journal of Social Psychology, 45*, 211-216.

Allport, F. H. (1924). *Social psychology*. Boston, MA: Houghton Mifflin.

Allport, G. W. (1985). The historical background of social psychology. In G. Lindzey & E. Aronson (Eds.), *Handbook of social psychology* (3rd ed., Vol. I, pp. 1-46). New York: Random House.

Asch, S. E. (1952). *Social psychology*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

B. F. Skinner (1938). *The Behavior of Organisms: An Experimental Analysis*. Cambridge, Massachusetts: B. F. Skinner Foundation.

Bandura, A. (1977). *Social learning theory*. Englewood Cliff s, NJ: Prentice-Hall.

Bartlett, F. C. (1932). *Remembering: A study in experimental and social psychology.* Cambridge: Cambridge University Press.

Berkowitz, L. (1962). *Aggression: A social psychological analysis*. New York, NY: McGraw-Hill.

Dalal, A. K., & Mishra, G. (2001). Social psychology in India: Evolution and emerging trends. In In A. K. Dalal& G. Misra (Eds.), *New Directions in Indian Psychology* (vol. 1: Social Psychology), New Delhi: Sage.

Darley, J. M., &Latané, B. (1968). Bystander intervention in emergencies: Diffusion of responsibility. *Journal of Personality and Social Psychology, 8*, 377-383.

Eagly, A. H., &Chaiken, S. (1993). *The psychology of attitudes*. Fort Worth, TX: Harcourt Brace Jovanovich.

Festinger, L. (1954). A theory of social comparison processes. *Human Relations, 7*, 117-140.

Festinger, L. (1957). *A theory of cognitive dissonance.* Evanston, IL: Row, Peterson.

Fiske, S. T., & Taylor, S. E. (2008). *Social cognition: From brains to culture*. Boston, MA: McGraw-Hill.

Haney, C., Banks, C., & Zimbardo, P. (1973). Interpersonal dynamics in a simulated prison. *International Journal of Criminology and Penology, 1*, 69-97.

Hovland, C. I., Janis, I. L., & Kelley, H. H. (1963). *Communication and persuasion*. Oxford, England: Yale University Press.

Janis, I. L. (1972). *Victims of groupthink: A psychological study of foreign policy decisions and fiascos*. Boston, MA: Houghton-Mifflin.

Kahneman, D., Slovic, P., & Tversky, A. (1982). *Judgment under uncertainty: Heuristics and biases*. Cambridge, England: Cambridge University Press.

Kassin, S., Fein, S., & Markus, H. R. (2017). *Social psychology (10th ed.)*. Cengage Learning.

Kelley, H. H., & Thibaut, J. W. (1978). *Interpersonal relations: A theory of interdependence*. New York: Wiley.

LeBon, G. (1908). *The crowd: A study of the popular mind*. London: Unwin (original work published 1896). Online:
http://cupid.ecom.unimelb.edu.au/het/lebon/crowds.pdf

Lewin, K.(1936). *A dynamic theory of personality.* New York: McGraw-Hill.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

Lieberman, M. D. (2010). Social cognitive neuroscience. In S. T. Fiske, D. T. Gilbert, & G. Lindzey (Eds.), *Handbook of social psychology* (5th ed., Vol. 1, pp. 143–193). Hoboken, NJ: John Wiley & Sons.

McDougall, W. (1908). *An introduction to social psychology*. London: Methuen.

McDougall, W. (1920). *The group mind*. London: Cambridge University Press.

Milgram, S. (1974). *Obedience to authority*. London: Tavistock.

Misra, G. (1982). Deprivation and development : A review of Indian studies. *Indian Educational Review, 18*, 12-33.

Murphy, G., & Murphy, L. B. (1931). *Experimental social psychology*. New York: Harper (rev. ed published with T. M. Newcomb in 1937).

Pandey, J. (1986). Social-cultural perspectives on ingratiation. In B.A. Mahar & W.B. Mahar (Ed.), *Progress in experimental personality research* (Vol. 14). New York: Academic Press.

Pavlov, I.P. (1927). *Conditioned Reflexes: An Investigation of the Physiological Activity of the Cerebral Cortex* (translated by G.V. Anrep). London: Oxford University Press.

Ross, E. A. (1908). *Social psychology*. New York: Macmillan.

Sherif, M. (1936). *The psychology of social norms*. New York: Harper.

Singh, A. K. (1981). Development of religious identity and prejudice in Indian children. In D. Sinha (Ed.), *Socialization of the Indian Child* (pp.87-100). New Delhi: Concept.

Sinha, D. (1952). Behaviour in a catastrophic situation: A psychological study of reports and rumours. *British Journal of Psychology, 43*, 200-209.

Sinha, J. B. P. (1980). *Nurturant task leader*. New Delhi: Concept.

Triplett, N. (1898). The dynamogenic factors in pacemaking and competition. *American Journal of Psychology, 9*, 507-533.